Postal Reg. No.GDP -45/2017-2019

अल्लाह तआला का आदेश

لَا يَتَّخِذِ الْمُؤْمِنُوْنَ الْكٰفِرِيْنَ اَوْلِيَآءَ مِنْ دُوْنِ الْمُؤْمِنِيْنَ ۚ وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ فَلَيْسَ مِنَ اللّٰهِ فِيْ شَيْءٍ اِلَّآ اَنْ تَتَّقُوْا مِنْهُمْ تُقٰىةً ۗ وَيُحَذِّرُكُمُ اللّٰهُ نَفْسَهٗ ۗ وَاِلَى اللّٰهِ الْمَصِيْرُ

(सूरत आले-इम्रान आयत :27)

अनुवाद: मोमिन मोमिन को छोड़ कर काफिरों को दोस्त न पकड़े। और जो कोई इस तरह करेगा तो वह अल्लाह से कोई सम्बन्ध नहीं रखता। सिवाए इस के कि तुम उन से पूरी तरह सावधान रहो। अल्लाह तुम्हें उन से खबरदार करता है और अल्लाह की तरफ ही लौट कर जाना है

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّيْ عَلٰى رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ وَعَلٰى عَبْدِهِ الْمَسِيْحِ الْمَوْعُوْدِ

وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدْرٍ وَّاَنْتُمْ اَذِلَّةٌ

वर्ष 4

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

The Weekly BADAR Qadian HINDI

अंक 7

मूल्य 500 रुपए वार्षिक

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

8 जमादी सानी 1440 हिजरी कमरी 14 तब्लीग़ 1397 हिजरी शमसी 14 फरवरी 2019 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल;ल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़जल नाज़िल करे। आमीन

विरोधियों के साथ दुश्मनी से व्यवहार नहीं करना चाहिए बल्कि अधिकतर दुआ से काम लेना चाहिए।

लोग तुम्हें दुःख जाएंगे और हर तरह से कष्ट पहुंचाएंगे परन्तु हमारी जमाअत के लोगों जोश न दिखाऐं, नफ्स के जोश से दिल दुखाने वाले अल्फाज़ इस्तेमाल न करो।

धनवानों में अहंकार है परन्तु आजकल उलमा में इस से बढ़कर है। उनका अहंकार एक दीवार की तरह उनकी राह में रुकावट है। मैं इस दीवार को तोड़ना चाहता हूं। जब यह दीवार टूट जाएगी तो वे विनम्रता के साथ आएंगे।

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

विरोधियों के लिए दुआ से काम लेना चाहिए।

फरमाया: हमने जो विरोधियों पर कुछ जगह आलोचना की है वह उनके अहंकार को दूर करने के लिए की है वे सख्त बातों का जवाब नहीं बल्कि इलाज के तौर पर कड़वी दवाई है "अल्हक्को मुर्रुन" परन्तु प्रत्येक व्यक्ति के वास्ते उचित नहीं कि वे ऐसी तहरीर को प्रयोग करे। जमाअत को सावधानी करनी चाहिए। हर एक व्यक्ति अपने दिल को पहले टटोल कर देख ले कि सिर्फ ज़िद और दुश्मनी के तौर पर ऐसे शब्द लिख रहा है या किसी नेक नियत पर यह काम आधारित है।

फरमाया: विरोधियों के साथ दुश्मनी से व्यवहार नहीं करना चाहिए बल्कि अधिकतर दुआ से काम लेना चाहिए और अन्य माध्यमों से कोशिश करनी चाहिए।

फरमाया: लोग तुम्हें दुख जाएंगे और हर तरह से कष्ट पहुंचाएंगे परन्तु हमारी जमाआत के लोगों जोश न दिखाएं, नफ्स के जोश से दिल दुखाने वाले अल्फाज़ इस्तेमाल न करो। अल्लाह तआला को ऐसे लोग पसंद नहीं होते। हमारी जमाअत को अल्लाह तआला एक नेक नमूना बनाना चाहता है।

फरमाया: यह आसमानी काम है और आसमानी काम रुक नहीं सकता। इस मामले में हमारा कदम एक ज़रा भी मध्य में नहीं।

फरमाया: लोगों की गालियों से हमारा नफ्स जोश में नहीं आता।

फरमाया: धनवानों में अहंकार है परंतु आजकल उलमा में इस से बढ़कर है। उनका अहंकार एक दीवार की तरह उनकी राह में रुकावट है। मैं इस दीवार को तोड़ना चाहता हूं। जब यह दीवार टूट जाएगी तो वे विनम्रता के साथ आएंगे।

फरमाया: अल्लाह ताला मुत्तकी को प्यार करता है। ख़ुदा तआला के सम्मान को याद करके सब भयभीत रहो और याद रखो कि सब अल्लाह तआला के बंदे हैं। किसी पर अत्याचार ना करो। न तेज़ी करो। न किसी को हीन भावना से देखो। जमाअत में यदि एक आदमी गंदा है तो वह सब को गंदा कर देता है। अगर बुख़ार की तरफ तुम्हारी तबीयत का मिलान हो तो फिर अपने दिल को टटोलो यह गर्मी किस चश्मा से निकली है यह स्थान बहुत सूक्ष्म है।

तकवा के बारे में नसीहत

अपनी जमाअत की भलाई के लिए ज्यादा ज़रूरी बात यह मालूम होती है कि तक्वा के बारे में नसीहत की जाए क्योंकि यह बात अक्लमन्द के निकट स्पष्ट है कि तक्वा के अतिरिक्त और किसी बात से अल्लाह तआला प्रसन्न नहीं होता। अल्लाह तआला फरमाता है।

اِنَّ اللّٰهَ مَعَ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا وَّالَّذِيْنَ هُمْ مُّحْسِنُوْنَ

(अन्नहल:129)

हमारी जमाअत के लिए विशेष तौर पर तक्वा की आवश्यकता है विशेष रूप से इस विचार से भी के वे एक ऐसे व्यक्ति से संबंध रखते हैं और उसके बैअत के सिलसिला में हैं जिस का दावा मामूर होने का है ताकि वे लोग जो चाहे किसी किस्म के हसदों, द्वैषों में पीड़ित हैं या कैसे ही दुनिया के कीड़े हैं उन समस्त कष्टों से मुक्ति पाएं।

आप जानते हैं कि अगर कोई बीमार हो जाए तो चाहे उसकी बीमारी छोटी हो या बड़ी अगर उस बीमारी के लिए दवा ना की जाए और इलाज के लिए कष्ट ना उठाया जाए बीमार अच्छा नहीं हो सकता। एक काला दाग मुंह पर निकल कर एक बड़ी चिंता पैदा कर देता है। कहीं यह दाग़ बढ़ता-बढ़ता सारे मुंह को काला ना कर दे। इसी तरह गुनाह का भी एक काला दाग़ दिल पर होता है। छोटे दागों से बड़े दाग बन जाते हैं। छोटे गुनाह हलकेर रूप में लेने से बड़े गुनाह बन जाते हैं जो बढ़कर अंत में सारे मुंह को काला कर देता है।

अल्लाह तआला दयालु कृपालु है वैसे ही का कह्हार और बदला लेने वाला भी है। एक जमाअत को देखता है कि उनका दावा और मुंह की बातें तो बहुत हैं और उनकी व्यावहारिक अवस्था ऐसी नहीं है तो उसका क्रोध बढ़ जाता है फिर ऐसी जमाअत को सज़ा देने के लिए वह काफिरों को ही चुन लेता है जो लोग इतिहास से परिचित हैं वे जानते हैं कि कई बार मुसलमान काफिरों से कत्ल किए गए जैसे चंगेज़ ख़ान और हलाकू ख़ान ने मुसलमानों को तबाह किया हालांकि अल्लाह तआला ने मुसलमानों से सहायता और समर्थन का वादा किया है लेकिन फिर भी मुसलमान पराजित हुए इस प्रकार की घटनाएं कई बार देखने में आई हैं। इसका कारण यही है कि जब अल्लाह तआला देखता है कि لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه तो पुकारती है लेकिन उस का दिल दूसरी तरफ है और अपने कामों से वह बिल्कुल दुनिया का कीड़ा है तो फिर उसका क्रोध

शेष पृष्ठ 12 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ की डेनमार्क और सवीडन का सफर, सितम्बर 2018 ई (भाग-7)

कुरआन वह पूर्ण शरीयत है जो दुनिया को हिदायत का सामान देती है और इसके अलावा कोई धर्म और कोई शरीयत नहीं जो दुनिया का मार्ग दर्शन और उद्धार प्रस्तुत कर सके और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ख़ातमुन्नबिय्यीन हैं और अब आपके बाद कोई शरीयत वाला नबी नहीं आ सकता है। हाँ अल्लाह तआला की इस घोषणा के अनुसार कि अब सभी धर्मों पर इस्लाम को विजयी होगी और नए युग में बाद में आने वाले दिनों में यह हिदायत के प्रकाशन की पूर्णता के लिए वह हिदायत जो हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर पूर्ण हुई आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सच्चे ग़ुलाम को आप की ग़ुलामी में अल्लाह तआला ज़िल्ली और गैर शरई नबी का दर्जा देकर मसीह मौऊद और महदी मौऊद के नाम से भेजेगा। अत: अल्लाह तआला के इस वादे और घोषणा को पूरा करने के लिए उसने हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद कादियानी अलैहिस्सलाम को मसीह मौऊद और महदी मौऊद बनाकर भेजा

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ का ईमान वर्धक ख़िताब

(रिपोर्ट: अब्दुल माजिद ताहिर, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)

(अनुवादक: शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री)

9 सितंबर 2018 (रविवार)

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने पांच बज कर पचास मिनट पर पधार कर नमाज़ फज्र पढ़ाई। नमाज़ की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला अपने निवास पर तशरीफ ले गए।

सुबह हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने दफ्तर की डाक देखी और विभिन्न दफ्तर के काम देखे। आज जमाअत अहमदिया जर्मनी के जलसा का तीसरा और आख़री दिन था। प्रोग्राम के अनुसार 3 बज कर चालीस मिन्ट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला मर्दाना जलास गाह में पधारे और बैअत का आयोजन हुआ। यह एक आलमी बैअत थी। जो एम,टी,ए इंटरनेशनल के माध्यम से दुनिया भर के देशों में लाइव प्रसारित की गई और दुनिया के सभी देशों की जमाअतों ने इस संचार के माध्यम से अपने प्यारे आक़ा की बैअत की तौफीक़ पाई।

आज हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह के मुबारक हाथ पर अल्बानिया, अफगानिस्तान, बोज़निया, बुल्गारिया, क्रोएशिया, फ्रांस, जर्मनी, हंगरी, कोसोवो, कुर्दिश, लेबनान, नॉर्वे, पाकिस्तान, साउटोमे, सीरिया, तुर्की और अरब से संबंधित 42 लोग ने बैअत की सआदत पाई। उन में से 26 पुरुष और 16 महिलाएं थीं। आख़िर पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने दुआ की तौफीक़ पाई। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने नमाज़ ज़ुहर तथा आसर जमा कर के पढ़ाई। नमाज़ों के अदा करने के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ जैसे ही जलसा के समापन सत्र के लिए मंच पर आए तो सारा जलसा गाह गगनभेदी नारों से गूंज उठा और जमाअत के लोगों ने बड़े रोमांच और जोश के साथ नारे बुलंद किए।

समापन सत्र जलसा सालाना जर्मनी

समापन सत्र का आरम्भ कुरआन मजीद की तिलावत से हुआ जो आदरणीय मुहम्मद इलयास मुनीर साहिब मुबल्लिग़ सिलसिला जर्मनी ने की और बाद में इसका उर्दू अनुवाद प्रस्तुत किया। जबकि इस का जर्मन अनुवाद शोएब अहमद उमर साहिब, उस्ताद जामिया जर्मनी द्वारा प्रस्तुत किया गया। इसके बाद प्रिय मुर्तज़ा मन्नान साहिब ने हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का मनज़ूम कलाम

जो ख़ाक में मिले उसे मिलता है आशना
ए आज़माने वाले यह नुस्ख़ा भी आज़मा

अच्छी आवाज़ से पेश किया। इस के बाद सेनेगल से आने वाले एक मेहमान अल्हाज फ़ॉलो सुला साहिब जो सेनेगाल के एक बड़े शहर अमबोर के मेयर हैं और संप्रदाय मुरीद के ख़लीफा के प्रतिनिधि के रूप में आए थे, ने अपना सम्बोधन पेश किया। महोदय ने कहा, "मैं पहली बार जमाअत की जलसा में भाग ले रहा हूं, और मैं आपसे मिल कर बहुत ख़ुश हूं। हमारी हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ से मुलाकात हुई है। हुज़ूर अनवर ने हमें प्यार, प्रेम, सम्मान और भाईचारा का कहा है। हम इस संदेश को सेनगाल में फैलाऐंगे और इसका पालन भी करेंगे। सेनेगाल में हमारे ख़लीफा मुरीद हैं उन का भी यही सन्देश है और यह हमें मिलकर इकट्ठे काम करने में सहयोग करेगा। मैं ख़लीफतुल मसीह को ख़लीफा मुरीद की तरफ से और सेनागाल के लोगों की तरफ से सेनेगाल आने की दावत देता हूं। इस सम्बोधन के बाद महोदय ने हुज़ूर अनवर की सेवा में अपने ख़लीफा की तरफ से एक वस्त्र और लकड़ी की बनी हुई एक नाव के रूप में उपहार दिया।

शैक्षिक पुरस्कार वितरण

इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने शिक्षा के क्षेत्र में बहुत सफलता प्राप्त करने वाले और उच्च प्रदर्शन वाले छात्रों को सन्दात और पदक प्रदान कि। निम्नलिखित स्नातक छात्रों को हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ के आनंद मुबारक से अक़ादमिक पुरस्कार दिए।

डॉक्टर उबैदा राशिद राणा साहिब जर्मनी Habilitation in Internal Medicine

डॉ मुहम्मद सरफराज बलोच साहिब जर्मनी consultant as neurosurgery

डॉक्टर फ़ुर्कान अहमद राजपूत साहिब जर्मनी consultant as radiology

डॉक्टर मलक वसीम अहमद साहिब consultant as internal medicine

डॉक्टर उमेर बाजवा साहिब जर्मनी consultant as orthopedics

डॉक्टर खुर्रम शहजाद अहमद साहिब जर्मनी consultant as general surgery

डॉक्टर अबरार मिर्ज़ा साहिब जर्मनी consultant as general medicine

डॉक्टर शहज़ाद अहमद खोखर साहिब जर्मनी PhD in biology

डॉक्टर वजाहत अहमद वड़ेच साहिब जर्मनी PhD in biology internal medicine

डॉक्टर रोवन वाल्टर साहिब जर्मनी PhD in computer science

डॉ मुहम्मद वलीद अहमद सेठी साहिब जर्मनी PhD in medicine

ज़फरुल्लाह जहीर अहमद साहिब जर्मनी state examination in human medicine

मलक वलीद अहमद साहिब जर्मनी state examination in human medicine

आसिम बिलाल आरिफ साहिब जर्मनी state examination in human medicine

नेदिर अहमद संधू साहिब जर्मनी state examination in human medicine

अफ्फान अहमद गफूर साहिब जर्मनी state examination in human medicine

बासिल अहमद मिर्ज़ा साहिब जर्मनी 2nd state examination in teaching

मुतह्हर अहमद बाजवा साहिब जर्मनी 1st state examination in law sciences

दानियाल परवेज साहिब जर्मनी 1st state examination in law sciences

अताउर्रहमान अली साहिब जर्मनी MSc technical biologie

नोअमान महमूद साहिब जर्मनी MA in international Islamic science

राशिद अहमद बाजवा साहिब जर्मनी MA in international Islamic

शेष पृष्ठ 9 पर

ख़ुत्बः जुमअः

आर्थिक कुरबानी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम की जमाअत की एक विशेष गुण है।

वर्ष की सच्ची शुभकामना यह है कि हम यह अहद करें कि जो अल्लाह तआला ने जो में हमें एक दूसरे वर्ष का सूर्य दिखाया है,इस में प्रवेश किया है तो इस में हम अपने अन्दर की कमज़ोरियों और अंधकारों को दूर करने का प्रयास करें।
पिछले वर्ष जो कमियां और भूल रह गए थे हम यह वादा करें हैं कि हम उन्हें दूर करेंगे।

अपने अन्दर पहले से बढ़ कर परिवर्तन पैदा करने की कोशिश करेंगे। जिस को प्राप्त करने के लिए हम ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से वादा किया है

नए साल के आरम्भ की पहली रात में, तहज्जुद और जमाअत के साथ फज्र नमाज़ सारे सालकी नेकियों पर हावी नहीं हो जाती बल्कि इस कोशशि को यथा सामर्थ्य सारा साल जारी रखने की कोशिश करनी चाहिए।

इस ज़माना में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने कुरआन करीम और आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आदेशों और उपदेशों की रौशनी में आर्थिक कुरबानी की विशेष गुण प्रदान किया है।

वित्तीय कुरबानियां हमें लाभान्वित करने के लिए हैं।

विरोधी तो जमाअत को मिटाना चाहते थे, परन्तु इस विरोध ने कुछ अहमदियों को ईमान को पहले से अधिक दृढ़ कर दिया है।

हमारा यह काम है कि अपना सुधार करें। अल्लाह तआला के आगे झुकें और अधिक से अधिक तब्लीग़ पर ज़ोर दें। कुरबानियों पर ध्यान दें और दुनिया को इस्लाम की वास्तविकता को समझाएं।

अल्लाह तआला सभी मुल्कों के शामिल होने वालों के माल तथा नफूस में बरकत प्रदान करे। और भविष्य में भी उच्च कुरबानी प्रस्तुत करने की तौफीक़ प्रदान करे।

वैश्विक रूप से जमाअतों के स्थान की दृष्टि से पहले नंबर पर पाकिस्तान और फिर ब्रिटेन, जर्मनी और अमेरिका हैं।
प्रति व्यक्ति अदायगी के अनुसार, संयुक्त राज्य अमेरिका, कुल वुसूली की दृष्टि से अफ्रीका के देशों में घाना प्रथम स्थान पर है।
अफ्रीका के कई देशों ने वक्फे जदीद के बारे में बहुत ही अच्छा काम किया है

विभिन्न पहलुओं से, पाकिस्तान, ब्रिटेन, जर्मनी, अमेरिका, कनाडा, भारत और ऑस्ट्रेलिया की आदर्श कुरबानी करने वाली जमाअतों की समीक्षा

वक्फे जदीद का बरकतों वाला इक्सठवें साल का समापन और नए साल के आरम्भ के अवसर पर धर्म को दुनिया पर प्राथमिकता का वादा निभाने वाले विभिन्न देशों से संबंध रखने वाले जमाअत अहमदिया के श्रद्धालुओं की माली कुरबानियों के ईमान वर्धक घटनाएं और नए साल की मुबारकबाद का वास्तविक दर्शन

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 4 जनवरी 2019 ई. स्थान - मस्जिद बैतुलफ़ुतूह, मोर्डन लंदन, यू.के.

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ۔ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

आज 2019 का पहला जुम्अः है। इस संदर्भ में, सारी दुनिया के अहमदियों को पहले तो नए वर्ष के बधाई देना चाहता हूं। अल्लाह तआला इस वर्ष को हमारे लिए मुबारक करे और कई सफलताएं ले कर आए। लेकिन हमें यह भी याद रखना चाहिए कि औपचारिक मुबारकबाद देना को कोई फायदा नहीं देता है। और न ही औपचारिक बधाई अल्लाह तआला की प्रसन्नता को प्राप्त करने वाला बनाती है। वर्ष की सच्ची बधाई यह है कि हमें यह वादा करें कि अल्लाह तआला ने जो में हमें एक दूसरे वर्ष का सूर्य दिखाया है,इस में प्रवेश किया है तो इस में हम अपने अन्दर की कमज़ोरियों और अंधकारों को दूर करने का प्रयास करें। पिछले वर्ष जो कमियां और भूल रह गए थे हम यह वादा करें हैं कि हम उन्हें दूर करेंगे।अपने अन्दर पहले से बढ़ कर परिवर्तन पैदा करने की कोशिश करेंगे। जिस को प्राप्त करने के लिए हम ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से वादा किया है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम एक अवसर पर वर्णन करते हैं एक अहमदी को किस प्रकार का होना चाहिए।

" आदमी को बैअत कर के केवल यह स्वीकार नहीं करना चाहिए कि यह सिलसिला सच्चा है और इतना मानने से केवल इसे बरकत होती है" फरमाया कि..." कोशिश करो कि जब इस सिलसिला में दाख़िल हुए तो नेक बनो और प्रत्ये बुराई से बचो।..... रात और दिन अल्लाह तआला के हुज़ूर रोने में लगे रहो.... ज़बान को नर्म रखो। इस्तिग़फार को अपनी आदत बनाओ। नमाज़ों में दुआएं करो।" नमाज़ों में दुआएं उसी समय होंगी जब नमाज़ों का हक अदा करने वाले होंगे। उन्हें संवार कर पढ़ने वाले होंगे। फरमाया कि" केवल मानना इन्सान के काम नहीं आता।.... ख़ुदा तआला केवल कथन से राज़ी नहीं होता कुरआन शरीफ में अल्लाह तआला ने ईमान के साथ सालेह कर्म भी रखे हैं।" अमल सालेह उसे कहते हैं जिस में एक कण मात्र भी फसाद न हो।"

(मल्फूज़ात जिल्द 4 पृष्ठ 247-275 प्रकाशन 1985 ई प्रकाशन यू.के)

तो, यह गुणवत्ता है, यह एक लाहे अमल है कि जिस पर हम यदि इस वर्ष अनुकरण करने वाले होंगे, इन बातों को प्राप्त करने वाले होंगे अपनी सारी योग्यताओं को प्रयोग करने की कोशिश करेंगे तो निसन्देह यह वर्ष हमारे लिए बहुत बरकतों वाला और साल होगा। और अगर ऐसा नहीं है तो जैसा कि मैंने अभी कहा कि

हमारे नए साल की बधाई एक औपचारिक बधाई है। नए साल की पहली रात में तहज्जुद तथा जमाअत के साथ नमाज़ फज्र अदा कर लेना सारे साल की नेकियों से बढ़ कर नहीं है बल्कि इस कोशिश को अपने सामर्थ्य के अनुसार सारा साल जारी रखना चाहिए। अल्लाह तआला हमें इस की तौफीक़ प्रदान करे और वास्तव में हमें व्यक्तिगत जीवन में भी यह साल बहुत सी बरकतों वाला और जमाअत के लिए ग़ैर मामूली तरक्कियां भी हम देखने वाले हों।

फिर मैं अगले विषय पर आता हूं। जैसा कि हम जानते हैं कि जनवरी से वक्फ जदीद का साल शुरू होता है। और जनवरी के पहले या दूसरे ख़ुत्बा में प्राय वक्फ जदीद का वर्ष घोषित किया जाता है। अल्लाह तआला की कृपा का माली कुरबानी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम की जमाअत की जमाअत का एक विशेष गुण है। और क्यों न हो कि इस ज़माना में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम ने कुरआन करीम तथा आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आदेशों और उपदेशों की रोशनी में इस माली कुरबानी का विशेष विशेषाधिकार दिया है। कुरआन की कई जगहों पर अल्लाह तआला ने अल्लाह तआला के रास्ते में खर्च करने पर ध्यान केंद्रित किया गया है, इसलिए नहीं कि अल्लाह तआला को हमारे धन की आवश्यकता है, बल्कि इसलिए कि इस से हमें फायदा होता है। और हम सामूहिक रूप से समग्र वृद्धि को भी देखते हैं। जमाअत को भी फायदा होता है। अल्लाह तआला कुरआन में फरमाता है

فَاتَّقُوا اللّٰهَ مَا اسْتَطَعْتُمْ وَاسْمَعُوْا وَاَطِيْعُوْا وَاَنْفِقُوْا خَيْرًا لِّاَنْفُسِكُمْ ۔ وَمَنْ يُّوْقَ شُحَّ نَفْسِهٖ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ

(अत्तग़ाबुन 17)

अर्थात अल्लाह तआला के तक्वा धारण करो जिस सीमा तक तुम्हे सामर्थ्य है और खर्च करो यह तुम्हारे लिए बेहतर होगा। और जो नफ्स की कंजूसी से बचाए जाएं तो यही लोग हैं जो सफल होने वाले हैं। फिर अगली आयत में फरमाया कि

اِنْ تُقْرِضُوا اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا يُّضٰعِفْهُ لَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ وَاللّٰهُ شَكُوْرٌ حَلِيْمٌ

(अल-बकरह 18) अगर तुम अल्लाह तआला को उत्तम कर्ज़ा दोगे तो वे उसे तुम्हारे लिए बढ़ा देगा और तुम्हें क्षमा कर देगा और अल्लाह बहुत जानने वाला और सहन करने वाला है।

अत: अल्लाह तआला बढ़ा चढ़ा कर देता है जो उस की राह में खर्च करता है। इस माली कुरबानी से व्यक्तिगत लाभ भी है और जमाअत की तरक्की भी है जो फिर व्यक्ति की तरक्की का कारण भी बनती है। इसी तरह अं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि कंजूसी से बचो। यह कंजूसी ही है जिस ने पहली क़ौमों को हलाक किया (सुनन अबू दाऊद किताबुज़्ज़कात हदीस 1698) इसी तरह आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक अवसर पर फरमाया कि आग से बचो चाहे आधी खजूर खर्च करने की ताकत हो।

(सहीह अल्बुख़ारी किताबुज़्ज़कात हदीस 1417)

यह साधारण खर्च भी अल्लाह तआला के मार्ग में अल्लाह तआला की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए देने आग से बचाता है। अत: यह माली कुरबीनियां हमें लाभ पंहुचाने के लिए हैं ।इस माली कुरबानी के महत्त्व की तरफ ध्यान दिलाते हुए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं कि

"तुम्हारे लिए संभव नहीं कि माल से भी प्रेम करो और ख़ुदा तआला से भी करो।" फरमाया "अत: भाग्यशाली वह व्यक्ति है जो अल्लाह तआला से प्यार करता है। और अगर कोई तुम में से अल्लाह तआला से प्यार करे उस के मार्ग में माल खर्च करे तो मुझे विश्वास है कि उसके धन में भी दूसरों की तुलना में अधिक बरकत होगी। क्योंकि माल ख़ुद नहीं आता है, बल्कि अल्लाह तआला की इच्छा से आता है। तो, जो व्यक्ति अल्लाह तआला के लिए संपत्ति का कुछ हिस्सा छोड़ता है, वह निश्चित रूप से इसे पा लेगा। लेकिन जो कोई भी अपने धन से प्यार करके अल्लाह तआला के मार्ग में सेवा नहीं करता है, तो वे ज़रूर अपने धन को खोएगा।" नष्ट हो जाएगा फरमाया कि,"यह मत सोचो कि धन तुम्हारे प्रयासों से आता है, बल्कि ख़ुदा तआला की तरफ से आता है। और यह मत सोचो कि तुम कोई हिस्सा माल का देकर या किसी अन्य तरीके से अल्लाह तआला के भेजे हुए पर कोई उपकार करते हो, बल्कि यह उस का उपकार है कि तुम्हें इस सेवा के लिए बुलाता है।" फरमाया" तुम निसन्देह समझो कि यह काम आकाश से आता है और तुम्हारी सेवा केवल तुम्हारी भलाई के लिए है।

(मजमूआ इश्तेहार जिल्द 3 पृष्ठ 497-498)

अल्लाह तआला के फज़ल से कुरबानियों और इस रूह को हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत में आने वालों ने ख़ूब समझा और बढ़ चढ़ कर कुरबानी की तरफ ध्यान देते हैं। न केवल वे कि जो एक समय से अहमदियत को स्वीकार किए हुए हैं बल्कि नए अहमदी भी बैअत करने के बाद इस माली कुरबानी की रूह को समझते हैं। इस तरह के भी हैं जो बहुत ग़रीब हैं परन्तु माली कुरबानियों में किसी से पीछे रहना नहीं चाहते। और इसी तरह कुरबानियां करना चाहते हैं जिस तरह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम के समय में सहाबा ने कीं। कुछ इस तरह के आदर्श हैं कि जिन के बारे में उस समय में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने उस समय फरमाया था कि मैं अपनी जमाअत की मुहब्बत तथा श्रद्धा पर आश्चर्य करता हूं कि उन में से बहुत ही कम आय वाले हैं। और आप ने उदाहरण दिया फरमाया जैसे मियां ख़रूद्दीन हैं और इमामुद्दीन कश्मीरी हैं फरमाया यह मेरे गांव के निकट रहने वाले हैं। वे तीनों भाई जो शायद चार आना मज़दूरी रोज़ाना करते हैं ज़ोरदार तरीके से माहाना चन्दा अदा करते हैं। चन्दे में शामिल हैं।

(उद्धरित रसाला अन्जामा आथम, रूहानी ख़ज़ायन जिल्द 11 पृष्ठ 313 हाशिया)

उन बुज़र्गों की उस समय यह धर्म के प्रकाशन के लिए कुरबानियां हैं जो आज उन की औलादें तथा नस्लें सुविधाओं से जीवन यापन कर रहे हैं। जैसा कि मैंने कहा कि यही रूह हमें आज नज़र आती है। कई स्थानों पर बल्कि बहुत से स्थानों पर और दूर के रहने वाले ग़रीब लोग नज़र आते हैं जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम के ज़माना के सौ साल बाद पैदा हुए या अहमदी हुए और कभी समय के ख़लीफा से सीधा मुलाक़ात नहीं हुई। परन्तु धर्म की मुहब्बत, ख़िलाफत की इताअत, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम से अहद वफा और अहद बैअत, धर्म के लिए कुर्बानी की भावना इतनी अधिक बढ़ी हुई है कि आश्चर्य होता है।। अगर केवल इस बात को ही देखा जाए तो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम की सच्चाई की एक दलील है। और यह भावना केवल अल्लाह तआला की हस्ती के और किसी भी प्रकार से पैदा नहीं हो सकता। कुछ लोगों की कुरबानियां तथा अल्लाह तआला के उन से व्यवहार की घटनाएं हैं उन में से कुछ प्रस्तुत करता हूं।

घाना के एक मित्र, फ्रिम्पॉन्ग (Frimpong) कहते हैं कि कुछ साल पहले मैंने अपनी शिक्षा के बारे में 5,000 पाऊंड अदायगी करनी थी। उस समय मैं काम भी कर रहा था लेकिन मेरा वेतन इतना नहीं था। यदि मैं बारह महीने का मासिक वेतन एकत्र कर लेता, तो मुझे इतने पैसे नहीं मिलते। बहरहाल मुझे बैंक से 3,000 डॉलर का ऋण मिला और मेरे वेतन का चालीस प्रतिशत मेरे ऋण की अदायगी करने के लिए चला जाता, लेकिन फिर भी मैं चन्दा पूरे वेतन पर अदा करता था। यह परवाह नहीं है कि 40 प्रतिशत चला जाता है। कहते हैं कि एक दिन कुमासी मिशन हाउस गया। कुमासी घाना का एक शहर है, तो सर्किट मिशनरी ने मुझे वक्फे जदीद के वादे के बारे में याद करवाया। उस समय मैंने अपनी जेब में हाथ डाला तो मेरे वादा के अनुसार रक़म मौजूद थी लेकिन मैंने सोचा कि अगर यह चन्दा मैंने अदा कर दिया तो मेरे पास नौकरी पर जाने के लिए बाकी दिनों के लिए पैसे नहीं बचेंगे। बहरहाल कहते हैं मैंने उसी समय उस राशि से चन्दा को अदा कर दिया। अगर मैं मिशन हाउस से घर जा रहा था तो मेरे पास यह संदेश आया कि कुछ पैसे मेरे बैंक खाते में ट्रांसफर कर दिए गए थे, जो उस से पांच गुणा अधिक थे जो मैंने दिए थे। जैसा कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फरमाया है कि अल्लाह तआला बढ़ाकर लौटाता है। कहते हैं मैंने सोचा कि शायद बैंक की ग़लती से पैसा आ गया है जो वह बाद में वापस ले लेंगे क्योंकि वेतन पहले ही मेरे खाते में आ चुका था लेकिन अगली बार जब मैं काम पर गया, तो मुझे पता चला कि सरकार की तरफ से यह रक़म मिली है जो पिछले महीनों के बकाया थे। मैंने इस पर अल्लाह तआला का धन्यवाद अदा किया। अल्लाह तआला ने मुझे डर के बावजूद चन्दा की रक़म अदा करने की हिम्मत प्रदान की। उस दिन के बाद फिर हमेशा मैं अपने वादे और अदायगी पर ध्यान देता हूं। यह अफ्रीका के हैं। सुदूर देश में रहने वाले हैं।

बुर्किना फ़ासो अफ्रीका का एक और देश है जो फ्रांसीसी बोलने वालों का देश है। वहां के बोबो-डायोलासो (Bobo-Dioulasso) के मुबल्लिग़ लिखते हैं। यह शहर का नाम है कि एक नए अहमदी ज़ोरी साहिब कुछ समय से मानसिक बीमारी के कारण परेशान थे और कुछ समय के लिए नींद की गोलियों का इस्तेमाल करते थे। डिप्रेशन हुआ और वह बहुत बड़ गया। एक दिन, हम मिशन हाउस आए और कहा कि उनका चन्दा वक्फे जदीद और तहरीक जदीद कितना है। हमारे मिशनरी ने बताया कि यह चन्दा आप आपने सामर्थ्य के अनुसार जितना अदा कर सकते हैं करें। इस पर उन्होंने कहा कि मानक चन्दा कितना है? मिशनरी ने उसे बताया। उन्होंने ख़ुशी ख़ुशी चन्दा अदा किया और चले गए। कुछ दिनों के बाद मिशन हाउस

आए और कहने लगे कि मैं बीमार था और चन्दा की बरकत से अब मेरी हालत बहुत अच्छी है। मैंने नींद की गोलियां खानी छोड़ दी हैं और मुझे ख़ुशी महसूस हो रही है। उसके बाद अल्लाह तआला की तरफ ध्यान पैदा हुआ। चन्दा दिया इबादत की तरफ ध्यान गया और अल्लाह तआला ने फज़ल फरमाया जबकि इससे पहले उनकी यह हालत थी कि आत्महत्या करने की तरफ ध्यान जाता था।

यू.के के ही एक दोस्त हैं, वह कहते हैं, कुछ समय पहले, मुझे फोन पर चन्दा तहरीक जदीद अदा करने की तहरीक की गई और मुझे बताया गया कि पिछले बार आप ने इतना चन्दा अदा किया है। उस समय मेरे पास पैसे नहीं थे। मैंने दुआ करनी शुरू कर दी कि अल्लाह तआला कहीं से ख़ुद ही अदा करने का प्रबन्ध कर दे। अत: कहते हैं कि दो सप्ताह के बाद, मुझे टेक्स विभाग से एक पत्र मिला। मैंने वर्ष के दौरान अधिक टेक्स अदा कर दिया था और वे इस राशि को लौटा रहे थे। मैं ख़ुद लेखाकार हूं और मुझे अपने टेक्स आदि की गणना के बारे में अच्छी तरह से पता है, लेकिन अल्लाह तआला ने चमत्कारिक रूप से इस धन का प्रबंधन किया है, क्योंकि मेरे हिसाब से तो पूरा चन्दा अदा कर दिया था। कहते हैं कि इस के कुछ महीने बाद सदर साहिब ने दोबारा फोन किया चन्दा वक्फ जदीद के बारे में मार्ग दर्शन किया और कहा कि पिछले साल मैंने इतना अदायगी किया था। इस पर मैंने पिछले साल की तुलना में थोड़ा अधिक बढ़ाकर वादा लिखवा दिया। संयोग से मेरे पास उस समय भी पैसे नहीं थे। फिर मैं सोचने लगा कि अल्लाह तआला ने पहले ही टैक्स रिटर्न की राशि भेज दी है, अब कोई रास्ता नज़र नहीं आता। फिर कहते हैं कि मैं दुआ में लग गया। एक सप्ताह बाद ही मैं अपने कागज़ देख रहा था तो मुझे एक बिन नज़र आया जिस के साथ कुछ आफर भी थी। मैंने कम्पनी वालों को फोन किया तो इस आफर के अनुसार मुझे प्री-पैड कार्ड बनवा कर भिजवा दिया गया। और उस में उस से अधिक रक़म मौजूद थी जो मैंने चन्दा में अदा करनी थी। इस तरह अल्लाह तआला ने वक्फे जदीद के चन्दा का प्रबन्ध कर दिया। ऐसा नहीं है कि अल्लाह तआला केवल अफ्रीका में नज़ारे दिखाते हैं, बल्कि हर जगह जो नेक इरादे से चन्दा अदा करना चाहें वह उन को इस तरह के नज़ारे दिखाता है।

बुर्किना फ़ासो से बिशारत अली साहिब मुबल्लिग़ कहते हैं कि बोरमो (Boromo) क्षेत्र के एक नए अहमदी कोने आदम (Kone Adama) साहिब को पिछले साल वक्फ जदीद की तहरीक की गई। इस पर उन्होंने जो हर साल गांव में मौलवी को देते थे वे चन्दे में दे दिया। मुसलमान थे उन्होंने बैअत कर ली तो उन्होंने कहा मैं हर साल जो मौलवी को देता था वह चन्दे में दे दिया। जब उनके पिता को इस बात का पता चला तो वह बहुत नाराज़ हुए और ज़मीन का एक हिस्सा उन्हें दे कर अलग कर दिया। वह कहते हैं कि उस वर्ष उन्होंने अपनी फसल लगाई थी। अल्लाह तआला की कृपा से बहुत अच्छी फसल हुई और कुछ स्थान पर अधिक बारिशों के कारण, फसलों को नुकसान हुआ था, लेकिन उनकी जो पानी वाले स्थान की फसल थी वह भी ख़राब नहीं हुई, जबकि उनके पिता और बाकी लोगों की फसल बारिश के कारण ख़राब हो गई। उन्होंने अपने पिता की फसल दोबार लगाने में उन की सहायता भी की और अपनी अच्छी फसल से उन को हिस्सा भी दिया। यह मुस्लिम थे और मुसलमानों से अहमदी हुए थे, लेकिन उनके पिता ने कहा कि निसन्देह तुम्हारी जमाअत को चन्दा देने के कारण अल्लाह तआला ने तुम्हारे ऊपर फज़्ल किया है। पिता जी ने इस बात को स्वीकार किया और यह भी कहा कि तुम्हारी जमाअत सच्ची है तुम इस पर दृढ़ रहना। मेरी मजबूरी है कि मौलवी को छोड़ नहीं सकता। कुछ पुराने संस्कार परंपराएं हैं जिन्होंने उन्हें बांधा हुआ है। और इस साल भी उन्होंने अपनी चन्दा दुगना अदा किया है।

गांबिया (Gambia) किआंग (Kiang) ज़िला के एक गाँव में जमाअत के विरोधियों ने जमाअत के सदस्यों को हटाने की कोशिश की और दावा किया कि वे सब अहमदियों को अहमदियत से निकालने में सफल रहे। हमारे एक अहम सदस्य जाल्लू साहिब ने मुअल्लिम साहिब को बताया कि हमारे विरोधियों का प्रयास एक खाद का काम कर रही थी, क्योंकि इस विरोध से पहले मैं एक सक्रिय अहमदी नहीं था, लेकिन अब मैं न केवल चन्दा तहरीक जदीद और अन्य तहरीक़ों की अदायगी कर रहा हूं, बल्कि वसीयत की बरकतों वाली स्कीम में भी शामिल हो गया हूं।।तो विरोधी जो जमाअत तो समाप्त करना चाहते थे, लेकिन इस विरोध ने अहमदियों को ईमान में पहले से अधिक कई गुणा बढ़ा दिया।

गिनी किनाकरी एक ऐसा देश है जहां एक दोस्त अकोबी (Akobi) साहिब कहते हैं कि मिशनरी इन्चार्ज ने वक्फ जदीद के बारे में मेरा पिछले साल का ख़ुत्बा जुम्अ: सुनाया, जिस में कुछ वित्तीय कुरबानी की घटनाओं का वर्णन किया गया था। तो कहते हैं मेरे दिल पर इस का बहुत प्रभाव हुआ। मैं अगले दिन अपने व्यवसाय के लिए सिरियालियोन जा रहा था। मेरे पास यात्रा करने के लिए सिर्फ तीन सौ डॉलर थे और मुझे बहुत अधिक धन की आवश्यकता थी, फिर भी मैंने 300 डालर में से 100 डॉलर अलग कर दिया और उसे एक लिफाफे में रख दिया कि मैं इसे वक्फे जदीद में अदा करूंगा। फिर मैं दूसरे कामों में लग गया और लिफाफा देना भूल गया। कहते हैं अभी इस बात को दो घंटे ही हुए हैं कि एक व्यक्ति ने मेरे कार्यालय में प्रवेश किया और मुझे एक लिफाफा दिया और कहा कि इसे आपके मित्र ने भेजा है। जब मैंने लिफाफा खोला तो देखा, तो इस में 3000 हज़ार डालर थे और लिखा था कि आप यात्रा पर जा रहे हैं मैं इसे आपकी यात्रा के लिए भेज रहा हूं। मुझे तुरंत याद आया कि मैंने तो अभी वह राशि भिजावई नहीं थी कि अल्लाह तआला ने कई गुणा वृद्धि करके मेरे पास लौट दी और फिर कहते हैं कि अल्लाह तआला की प्रशंसा से मेरी दिल भर गया कि उसने हमें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम की प्यारी जमाअत में शामिल होने की तौफीक़ प्रदान की है। इस प्रकार अल्लाह तआला लोगों के ईमान को बढ़ाता चला जा रहा है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने जो फरमाया कि माल अल्लाह तआला की तरफ से आता है, इस बात की इन को समझ आ रही है।

बैनिन के क्षेत्र बोहीकों (Bohicon) के मुबल्लिग़ सिलसिला लिखते हैं कि बोहीकों (Bohicon) क्षेत्र की एक जमाअत अबोमे (Abomey) के सदर जमाअत अहुआंगान जैक्स (Ahouangan Jacques) का कहना है कि उसके ज़िम्मा भारी मात्रा में कर्ज़ था जो अदायगी नहीं कर पा रहे थे। उसी समय, उनके सर्कल के मुअल्लिम ने चन्दा वक्फ जदीद की तरफ ध्यान दिलाया बताया कि साल समाप्त हो रहा है और जिस जिस ने अभी तक अपनी अदायगी पूरी नहीं की है, उसे जल्द से जल्द पूरा करना चाहिए। सदर साहिब कहते हैं कि मेरे पास इस समय ज्यादा पैसे नहीं थे, इसलिए कर्ज़ के अलावा, यह भी चिंता लग गई कि मुझे चन्दा वक्फ जदीद भी देना है। तो उस समय, मेरी जेब में पाँच सौ फ्रैंक थे वे इस चन्दे में दे दिए और घर चला गया। दुआ करता रहा कि कर्ज़ है वह कैसे अदा होगा कहते हैं अगले दिन मुझे एक नौकरी मिली जो कुछ दिनों की थी और जो वेतन तय किया गया था वह मेरे कर्ज़ की राशि से अधिक था, इसलिए मैंने काम की हामी भर ली और कुछ दिनों में वह काम समाप्त हो गया। सारा कर्ज़ भी चुका दिया गया और घर के राशन की भी व्यवस्था हो गई। कहते हैं कि अब मैं समझ गया हूं कि यह चन्दा की ही बरकत है। ये लोग इन चीजों को संयोग नहीं समझते बल्कि उन्हें लगता है कि अल्लाह तआला उन के प्रबन्ध कर रहा है।

माली क्षेत्र के सिकसो (Sikasso) के मुबल्लिग़ लिखते हैं कि एक नए अहमदी ने अहमदियत स्वीकार करने के बाद बताया कि अहमदियत स्वीकार करने के बाद मुझे चन्दा की अजीब बरकतें मिल रही हैं। मेरा एक बेटा हर साल बारिश के मौसम में गंभीर रूप से बीमार रहता था, जिसके इलाज पर बड़ी रकम खर्च होती थी और उसे परेशानियों और काम से छुट्टी अलग से लेनी पड़ती थी। लेकिन जब से मैंने थोड़ा सा चन्दा अदा करना शुरू किया है अल्लाह तआला की कृपा है कि लड़का बीमार नहीं हुआ और मुझे यकीन नहीं है कि यह सिर्फ अल्लाह तआला के रास्ते में खर्च करने के कारण से हुआ है।

आइवरी कोस्ट के क्षेत्र सैन पेडरो (San-Padro) के मुबल्लिग़ लिखते हैं कि एक गाँव कैम्प एलिफेंट (Kamp Elephant) में कुछ लोगों को अहमदियत स्वीकार करने की तौफीक़ मिली। इस वर्ष नवम्बर 2018 ई में इस जमाअत का दौरा करने की तौफीक़ मिली। रात देर तक तब्लीग़ करने की तौफीक़ मिली और ग़ैर अहमदी लोगों की भी एक बड़ी संख्या ने इस में शिरकत की। फिर एक अहमदी दोस्त के घर में एक नमाज़ फज्र अदा की गई, जिसमें अहमदी शामिल हुए और फिर इन अहमदियों को दर्स में बताया कि अगला महीना चन्दा वक्फ जदीद के अदा करने का आख़री महीना है। और इस में सभी अहमदी लोग ज़रूर शामिल हों। अत: दर्स के बाद लोग घरों में चले गए। कहते हैं मैं सोच रहा था। ग़रीब सा स्थान है। गाँव है अधिक ने सही तो पांच हज़ार फ्रैंक सीफा उन की तरफ से आ जाएगा और यह उनके लोगों के हिसाब से पर्याप्त होगा लेकिन वह कहते हैं जब वापस आने लगे तो मेरे आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा जब एक दोस्त मेरे पास आया और कहा हम क्षमा चाहते हैं कि फसल अभी तक तैयार नहीं हुई है और अभी भी स्थिति तंग है, इसलिए केवल सत्रह हज़ार सीफा रक़म पेश कर रहे हैं। और साथ ही कहने लगे कि दुआ करें कि अल्लाह तआला हमारे व्यापार में, हमारी फसलों में बरकत दे ताकि हम और अधिक चन्दा अदा कर सकें।

भारत के एक इंस्पेक्टर इकबाल साहिब लिखते हैं कि कामारेडी जमाअत में

वक्फ जदीद के हवाले से तहरीक की गई। एक नौजवान ने उसी समय अपने संपूर्ण चंद अदा कर दिया। इसके बाद उसी दिन उन्हें एक बहुत बड़ी रकम मिलने की सूचना मिली जिसका वह 8 वर्ष से भी अधिक समय से प्रतीक्षा कर रहे थे बल्कि इतना समय गुज़र गया था कि उन्होंने इस रकम के मिलने की आशा ही छोड़ दी थी ना केवल उन्हें रकम मिली बल्कि उनकी अस्थाई नौकरी भी स्थाई हो गई। इस पर वह बहुत ख़ुश हुए और कहने लगे यह केवल और केवल अल्लाह तआला के मार्ग में खर्च करने की वजह से चमत्कार हुआ है और अब वह कहते हैं कि हर साल अपने 15 रोज़ की आया चंदा वक्फ जदीद में दिया करूंगा।

रोमानिया जो पूर्वी यूरोप में है वहां के मुबल्लिग़ फहीम साहिब लिखते हैं यहां एक स्थानीय रोमानियन अहमदी हैं वहा टेलरिंग का काम करते हैं। बड़े नियमित हैं और श्रद्धा से चंदा देते हैं उन्हें कहने की जरूरत नहीं पड़ती हमेशा ख़ुद से चन्दा अदा कर देते हैं फिर भी करते हैं हमेशा लिफाफे में या किसी सफेद काग़ज़ में पेश करते हैं और कुर्बानी के अल्फाज लिखे होते हैं उन्होंने मुझे एक ख़त लिखा था इसी ख़त का हवाला वह मुरब्बी साहिब को देते हैं कि अपने अनुभव का वर्णन किया उन्होंने इस ख़त में लिखा कि अल्लाह तआला के फज़ल से मैं चंदा देता हूं जब से मैंने चंदा देना शुरू किया है यह बात मेरे अनुभव में है कि खुदा के लिए चंदा देने के साथ मेरे ग्राहकों की संख्या बढ़ी है। आय में ख़ुदा तआला का ख़ास फज़ल हुआ है। एक तरफ मैं अपनी जेब से खुदा के रास्ते में निकालता हूं और दूसरी तरफ अल्लाह तआला वही रकम बढ़ाकर मेरे पास ले आता है क्योंकि मेरे पास काम करवाने के लिए अधिक ग्राहक आ जाते हैं। ये हैं वे लोग कि उनको अल्लाह तआला इन देशों में , यूरोपीय देशों में रहते हुए भी,सांसारिक जीवन व्यतीत करने के बावजूद जब अहमदियत की तरफ ले आया था उनको अपने फज़लों से नवाज़ कर उनके ईमान में दृढ़ता प्रदान फरमा रहा है

भारत से इंस्पेक्टर साहिब लिखते हैं कि आज जयपुर में एक दोस्त जो के प्राइवेट स्कूल में टीचर थे पिछले साल उन को चन्दा वक्फ जदीद की तहरीक की गई। उन से निवेदन किया गया कि आप का वादा तो आपकी आय से 5000 रूप्या होना चाहिए इस पर वह कहने लगे मैं तो एक साधारण सा प्राइवेट स्कूल का टीचर हूं इतनी राशि कहां से अदा करुंगा ? बहरहाल उन्हें कहा गया कि अल्लाहतआला तौफीक़ भी प्रदान करेगा। इस साल जब दोबारा उनसे मिलने के लिए गए तो वह उसी स्कूल में प्रिंसिपल की कुर्सी पर बैठे हुए थे। कहने लगे के चंदे की बरकत की वजह से अल्लाह तआला ने इस कदर बरकत प्रदान की थी मैंने स्कूल ख़रीद लिया है और इस पर भी उनको तहरीक की गई कि इस साल फिर आपको अपना वादा बढ़ाना चाहिए ताकि अल्लाह तआला आपको और अधिक स्कूल ख़रीदने की तौफीक़ प्रदान करे। कहने लगे कि एक और स्कूल भी ख़रीदने की बात हो रही है और मालिक का भी फोन आया कि आप आकर चाबी ले जाएं और इंस्पेक्टर साहिब लिखते हैं उनके पास चार स्कूल हैं। पहले उनके मकान छत टीन की होती थी छोटा सा मकाम था। अब अल्लाह तआला के फज़्ल से तीन मंजिला मकान बन गया है जिस में एक मंज़िला उन्होंने नमाज़ जुम्अ: के लिए रखी हुई है यह फज़ल जो है यह केवल और केवल अल्लाह की राह में खर्च करने की वजह से है। इसकी वजह से उनके ईमान में भी वृद्धि हो रही है।

अमीर साहिब लायबेरिया कहते हैं कि दिसम्बर में हमारी टीम एक गांव सौकर टाऊन (Sookar Town) पहुंची। यह गांव मिनविदया (Monrovia) शहर से दूरी के लिहाज़ से अधिक दूर नहीं परन्तु वर्तमान समय की ज़रूरतों से बिल्कुल वंचित है। रास्ता भी बहुत कठिन है और वहां पहुचने के लिए तीन मंकी बिरजज़ (monkey bridges) अर्थात रस्सीयों तथा लकड़ी के बने हुए अस्थायी पुल हैं उन पर से गुज़रना पड़ता है। नमाज़ों के बाद तब्लीग़ का सिलसिला शुरू हुआ। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम का पैग़ाम पहुंचाया। जमाअत अहमदिया का उद्देश्य बताया। इस पर गांव के एक उमर वाले व्यक्ति उसमान कमारा उठे और अपने एक ख़वाब का वर्णन करते हुए कहा कि मैंने कुछ दिन पहले देखा था कि आकाश गिर गया है और हर तरफ कोहराम मचा है। इसी बीच, सड़क पर एक कार रुकी है जिसमें सफेद लोग बैठे हैं, जो हमें हमारे पास आने के लिए आवाज़ देते हैं, हम आपको शांति देंगे। इस पर यह सपना खत्म हो गया। तब मैं सोच रहा था कि यह कैसा सपना है। इसका क्या मतलब हो सकता है? मुझे लोगों के आने से पता चला कि सपने का मतलब होता है। उन्होंने कहा कि मैं काफी बूढ़ा हो गया हूं। मैंने गोरे लोगों को पहली बार ग़ैर-अफ्रीकी लोगों को इस्लाम की तब्लीग़ करते देखा है। इसलिए वहां के सभी लोगों ने जमाअत में शामिल होने का फैसला किया, बैअत कर ली और वक्फे जदीद के साल का भी अन्त था। उनसे कहा कि वे चन्दों की तरफ ध्यान दें। इस बैअत के बाद, जब उन्हें चन्दा की तहरीक़ की गई, तो उन्होंने चन्दा भी दिया, और उन में ईमान और ईमानदारी में वृद्धि हुई।

सदर जमाअत लज्ना इमाउल्लाह कैनेडा कहती हैं कि एक मज्लिस के दौरे के दौरान एक महिला ने बताया कि उसकी बारह वर्षीय लड़की को स्कूल की तरफ से अस्सी डॉलर का इनाम मिला। इससे वह अपनी इच्छा का कुछ ख़रीदना चाहती थी, लेकिन सैक्रेटरी वक्फे जदीद की तहरीक पर, उसने सारे पैसे चन्दे में अदा कर दिए। वह कहती हैं कि अल्लाह तआला ने उन्हें इस तरह से सम्मानित किया कि वह अब्दुल सलाम साइंस फेयर में इसका पहला स्थान आया और उसे 300 डालर का पुरस्कार मिला। इस प्रकार अल्लाह तआला ने इस बच्ची के ईमान और विश्वास को दृढ़ता प्रदान की।

आज एक नया खेल Fortnite शुरू हुई है। कुछ बच्चे इसमें अपना पैसा खो देते हैं। माता-पिता को भी उन्हें रोकना चाहिए और संगठनों को भी, विशेष रूप से ख़ुद्दामुल अहमदिया और अत्फालुल अहमदिया को भी चाहिए क्योंकि इस के बाद अगले कदम पर जाने के लिए कार्ड लेते हैं। फिर पैसे खर्च करते हैं। बल्कि पिछले दिनों में एक निबन्ध आया था एक अनुसंधान था कि कई ग्रुप इस तरह के हैं ग्रुप बन गए हैं जो बच्चों के साथ सम्पर्क करते हैं बहलाते हैं और कार्ड लेकर देने के बहाने फिर उन के माता पिता के बैंक इकाउन्ट नम्बर भी ले लेते हैं और कुछ समय बाद माता पिता को पता चलता है कि इन के बैंक इकाउन्ट में रकमें नहीं हैं। इस खेल के कारण, जो बच्चे में नशे की तरह की आदत पड़ जाती है इस से न केवल उन का समय नष्ट होता है और ग़लत सोच पैदा हो रही हैं, बल्कि कुछ माता-पिता को भी नुकसान हुआ है। इस चीज़ से बचना चाहिए और अल्लाह तआला जिस तरफ ध्यान दिलाया है कि अल्लाह तआला की राह में खर्च करो, यह भावना विशेष रूप से बच्चों में विशेष रूप से वक्फ जदीद को पैदा करनी चाहिए।

भारत के कर्नाटक प्रान्त के एक इन्सपैक्टर साहिब लिखते हैं कि कहते हैं कि एक रिफरेशर कोर्स आयोजित हुआ जिस में विनीत नायब नाज़िम माल वक्फे जदीद के साथ शामिल हुआ। वहां पर नायब नाज़िम माल ने वहां के लोकल मुअल्लिम के घर पर इस बात का वर्णन किया कि इस वर्ष केरला में बहुत बारिशें हुईं हैं और बहुत नुक्सान हुआ है इसलिए वक्फे जदीद की वसूली में परेशानी आ रही है। इस के बाद नायब नाज़िम माल ने मुअल्लिम साहिब के घर से जाते हुए उन के बच्चों को तोहफा के रूप में सौ-सौ रुपए दिए। कुछ समय बाद कहते हैं कि मैं दोबारा इस जमाअत में दौरा पर गया तो मुअल्लिम साहिब के बच्चों ने वही सौ सौ रुपए जो उन को तोहफे में मिले थे चन्दा वक्फ जदीद में अदा कर दिए और कहने लगे कि केरला की अवस्था इस समय चूंकि सैलाब के कारण ख़राब है इस लिए हमारी तरफ से यह चन्दा में स्वीकार कर लें। बावजूद छोटी आयु के उन के दिल में चन्दों को महत्त्व है।

यू.के जमाअत से एक लज्ना की औरत वर्णन करती हैं कि मुझे 2010 में अहमदियत स्वीकार करने की तौफीक़ मिली। बैअत के कारण घर से भी निकाल दिया गया। इस समय मेरे पास को ई नौकरी भी नहीं थी। मुझे बहुत लज्जा होती थी

दुआ का अभिलाषी
जी.एम. मुहम्मद शरीफ़
जमाअत अहमदिया मरकरा (कर्नाटक)

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

कि मैं चन्दा अदा नहीं कर पाती थी। हालांकि पहले साल नए अहमदियों के लिए चन्दा देना अनिवार्य भी नहीं है लेकिन कहती हैं कि मुझे बहरहाल फिक्र थी। कहती हैं किजब मैं ने वादा किया कि जब मुझे नौकरी मिलेगी तो मैंने जिस दिन से बैअत की है उसी समय से चन्दे का हिसाब अदा करूंगी। कुछ महीने के बाद मुझे नौकरी मिल गई। मैंने चन्दे अदा करने शुरू कर दिए। अल्लाह तआला के फज़्ल से एक साल में तीन बार में तन्ख़वाह में वृद्धि हुई। कुछ समय बाद माता पिता जिन्होंने मेरे से सम्बन्ध विच्छेद कर लिया था उन से सम्पर्क भी हो गया। सम्बन्ध स्थापित हो गया और माता पिता के साथ अच्छे सम्बन्ध भी हो गए। शादी हो गई है और कहती हैं कि मुझे अल्लाह तआला के फज़्ल से हर चीज़ उपलब्ध हो गई।

लायबेरिया से कैप टाऊन काऊंटी के लोकल मुअल्लिम साहिब कहते हैं कि नगबीना जमाअत में चन्दा वक्फे जदीद के हवाले से तहरीक की गई। कुछ दिन बाद एक मुख़िलस अहमदी औरत मूसूकमारा साहिबा ने बताया कि जब आप ने माली कुरबानी का वर्णन करते हुए चन्दा वक्फे जदीद का वर्णन किया तो बाकी लोग अपने चन्दे अदा कर रहे थे परन्तु मेरे पास कुछ नहीं था इसलिए अदा न कर सकी। कहती हैं कल रात मैंने ख़्वाब में देखा कि आप लोग फिर आए हैं और मैंने सौ लाइब्रेरियन डालर चन्दा में अदा किए हैं परन्तु सुब्ह उठ कर हैरान थी कि मेरे पास तो पैसे नहीं हैं चन्दा कैसे अदा करूंगी परन्तु ख़ुदा का इस तरह फज़्ल हुआ के अभी कुछ देर पहले कोई आदमी आया और मुझे पांच सौ लाइब्रेरियन डालर दे गया और बताया कि यह मेरे बेटे ने भेजे हैं। अर्थात उस औरत के बेटे न। अत: अपनी ख़वाब को पूरा करते हुए सौ लाइब्रेरियन डालर चन्दा अदा करने के लिए आई हूं।

बहुत सारी अन्य घटनांए हैं के औरतें चन्दा अदा करने में बल्कि मर्दों को सुधार करती हैं उन को चन्दा की तरफ ध्यान दलाती हैं और इस के महत्त्व को मर्दों से अधिक समझती हैं।

गिनी किनाकरी के अबू बकर साहिब लिखते हैं कि जो एक जमाअत के सदर हैं, खेती के काम से जुड़े हुए हैं कि अहमदियत स्वीकार करने के बाद मुझे प्राय: जमाअत के मुबल्लिग़ तथा मुअल्लिम साहिब चन्दों को अदा करने केबार में बताते थे। परन्तु मैं थोड़ी बहुत रकम अदा कर दिया करती था परन्तु मेरे पत्नी इस बारे में बहुत पाबन्द थी। और हमेशा नियम से चन्दा अदा किया करती थी और मुझे भी चन्दों को अदा करने की तरफ ध्यान दिलाया करती थीं। इस पर मैं उसे यह कहकर टाल देता के जब बहुत अधिक पैसे होते तो चन्दा अदा करूंगा। इस पर वह कहती के अधिक पैसे तब ही होंगे जब अल्लाह तआला का हक अदा करेंगे। इस तरह मेरी पत्नी ने ज़बरदस्ती मुझ से चन्दा अदा करवाना शुरू करवाया। जब मैंने पूरी आमदनी पर चन्दा करना शुरू कर दिया तो मैंने अल्लाह तआला के फज़्लों को बारिश की तरह बरसते हुए देखा। कहते हैं कि मुझे से अधिक पढ़े लिखे और खेती में डिग्रियां लेने वालों की फसलों को वह फल नहीं लगा जो अल्लाह तआला ने इस विनीत तथा तुच्छ को प्रदान करना आरम्भ किया। अब मैं ज़मीनों से फसल तब ही घर लाता हूं जब उन का पूरा हिसाब कर के लोकल मुबल्लिग़ को चन्दा अदा कर के उस से रसीद कटवा लेता हूं।

आइवेरी कोस्ट के एक क्षेत्र के मुबल्लिग़ लिखते हैं कि एक दोस्त ज़ाबलू साहिब को ख़वाब के माध्यम से अहमदियत स्वीकार करने की तौफीक़ मिली। बैअत के बाद नयमित ख़ुत्बे सुनते हैं और बहुत जोश वाले दाई इलल्लाह हैं। व्यक्तिगत रकम खर्च कर के जमाअत को लिट्रचर ख़रीद कर ग़ैर अहमदी लोगों को देते हैं।। ज़ाबलू साहिब एक होटल में काम करते हैं और अच्छी पोस्ट पर थे। परन्तु अब उन के पास नौकरी नहीं है। और उन की पत्नी है घर के खर्च करने में उन की सहायता करती हैं। कहते हैं कि कुछ दन पहले फोन करके उन्होंने कहा कि मैं तीस हज़ार फ्रांक चन्दा वक्फ जदी भेज रहा हूं। इस पर मैंने कहा क्योंकि मैं उन के हालात से परिचय रखता हूं कि आप की हालत अच्छी नहीं है इसलिए बेशक कम अदा करें। यह रक़म आप के लिए अधिक है और जलसा सालाना भी आ रहा है। इस पर वहकहने लगे के मैंने अपनी पत्नी से कहा है क बीस हज़ार फ्रांक चन्दा देते हैं परन्तु मेरी पत्नी का कहना है के हम ने तीस हज़ार फ्रांक सीफा ही अदा करना है और अल्लाह के फज़्ल से फिर वह जलसा में शामिल हुए। तो इस तरह बहुत से स्थान पर औरतों हैं जो मर्दों से कुरबानियां करवाती हैं।

आस्ट्रेलिया की एक जमाअत के सदर साहिब वर्णन करते हैं कि एक मुख़लिस दोस्त अपना चन्दा वक्फ जदीद अदा कर चुके थे। 20 दिसम्बर को आमला के सदस्यों को एक बार फिर विशेष तहरीक के माध्यम से बकाया अदा करने की तहरीक की गई। इन से सम्पर्क किया गया तो फिर उन्होंने एक विशेष रक़म अदा कर दी। अगले दिन शान को कहते हैं के उन का फोन आया और बहुत भावनात्मक अंदाज़ से कहने लगे कि ख़ाकसार ने चन्दा वक्फ जदीद की जो अदायगी की थी वह अल्लाह तआला ने एक ही दिन में पूरी कर दी। कहने लगे के मैं तीन साल से एक फोड टेक अवे चला रहा हूं। और पिछले तीन सालों में एक भी दिन इस तरह का नहीं आया कि इतने ग्राहक आए हों। जितने इस बार चन्दा अदा करने के बाद आए।

इसी तरह इंडोनेशिया की एक घटना है। ईमान पर स्थापित रहने वालों की यह इस तरह की घटनाएं हैं कि हैरत होती है। इंडोनेशिया में एक नए अहमदी जिन्होंने 2016 ई में बैअत की थी। बैअत के बाद उनके परिवार और पड़ोसियों ने उनका विरोध करना शुरू कर दिया। यहां तक कि एक दिन उनके परिवार के सदस्यों ने उन्हें काफी मारा और उन्होंने उन्हें जमाअत छोड़ने के लिए मजबूर किया। उन को मुबल्लिग़ से मुलाकात पर प्रतिबंध लगा दिया। इसके बाद वह छुप कर मुबल्लिग़ से मिलते। हमारे मुबल्लिग़ ने उनसे कहा कि जमाअत में आने के बाद कुरबानी करनी पड़ती है। अब आप ख़ुद ही देख लीजिए। लेकिन उन्होंने कहा कि मैं निश्चित रूप से कुरबानी दूंगा। चाहे विरोध बढ़ता जाना चाहिए? और चन्दा तथा आर्थिक कुरबानी के महत्व भी बताया गया। बैअत के एक महीने बाद ही चन्दा अदा करना शुरू कर दिया। स्थायी नौकरी नहीं थी। फिर भी जो भी छोटे-मोटे काम होते थे, तुरंत थोड़ी-थोड़ी रकम से चन्दा अलग कर देते थे। लोगों से छुप कर रातों को मिशन हाउस में मिलते। मिशन हाउस में जाने से पहले, गाँव के अलग-अलग रास्ते पर चक्कर लगाते ताकि लोग उन्हें मिशन हाउस जाते हुए न देख सकें, और इस हालत में भी महोदय ने नियमित रूप से मिशन हाउस से संपर्क रखा और चन्दा अदा करने के लिए आते रहे।

एक और घटना है जो अहमदी नहीं हैं उन को भी कई बार अल्लाह तआला की तरफ कैसे मार्ग दर्शन मिलता है? माली की जमाअत के मुबल्लिग़ साहिब लिखते हैं कि वक्फे जदीद के हवाले से रेडियो "अहमदिया कीता" पर मेरा ख़ुत्बा चल रहा था। पिछले साल का ख़ुत्बा की रिकॉर्डिंग चल रही थी। उसी समय वहां शहर से 45 किलोमीटर दूर एक गाँव के मुखिया ने फोन कर के हमें अपने गाँव में तब्लीग़ करने की दावत दी। जब हम तब्लीग़ करने के लिए वहाँ गए, तो मुखिया ने बड़े भावपूर्ण तरीके से कहा कि जब समय के ख़लीफा विभिन्न देशों में वक्फे जदीद के हवाले से ईमान वर्धक घटनाएं बता रहे थे तो उन्हें सुनकर, हम ग्रामीणों पर एक अद्भुत प्रभाव पड़ा। हमें अफसोस हुआ कि क्यों हम इस पवित्र तहरीक़ में भाग नहीं ले सके इसलिए मैंने आपको बुलाया है। वहां अहमदियों के टी.वी लगे हुए हैं, जिस पर वे ख़ुत्बा देख रहे थे न कि रेडियो पर थे। तब तब्लीग़ का कार्यक्रम किया गया और अल्लाह तआला की कृपा से, उसी दिन पचास लोगों ने अहमदियत को स्वीकार किया। ग्रामीणों ने उसी समय एक बोरी मक्की और हज़ार फ्रांक वक्फ जदीद मेंकी बरकतों वाली तहरीक़ में प्रस्तुत किया। अल्लाह तआला भी अजीब अजीब तरीके से हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के सन्देश को न केवल लोगों तक पहुंचा रहा है बल्कि मददगार भी बना रहा है।

बैनिन के लोकोसा के मुबल्लिग़ लिखते हैं कि लोकोसा की एक जमाअत में एक वक्फ जदीद की तहरीक़ की गई। कुछ दिनों बाद हमारा क्षेत्रीय जलसा भी वहीं था इस में शामिल होने के लिए भी तहरीक की गई। कहते हैं कि उस समय, सदर जमाअत ग़फ्फार साहिब मेरे पास आए और कहा कि उन्होंने कुछ रकम जलसा में शामिल होने के लिए कुछ पैसे एकत्र किए हैं, लेकिन चन्दा भी अदा करना ज़रूरी है। इसलिए क्या करना चाहिए? कहते हैं कि मैंने इस पर कहा कि जलसा पर शामिल हों। अल्लाह तआला फज़्ल फरमाएगा। चन्दा बाद में अदा कर दें। कहते हैं कि कुछ दिनों के बाद वह मुझे जलसा में मिले तो उन्होंने मुझे कुछ पैसे दिए और कहा, मेरा चन्दा ले लें तो कहते हैं कि मैंने सचिव माल को कहा कि इन को रसीद काट कर दे दें। सचिव माल ने कहा कि ग़फ्फार साहिब वही रक़म जो चन्दा में अदा की जो उन्होंने जलसा में आने के लिए जमा की थी और यह ख़ुद अपने परिवार के साथ

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अगर तुम चाहते हो कि तुम्हें दोनों दुनिया की फत्ह हासिल हो और लोगों के दिलों पर फत्ह पाओ तो पवित्रता धारण करो, और अपनी बात सुनो, और दूसरों को अपने उच्च आचरण का नमूना दिखाओ तब अलबत्ता सफल हो जाओगे।"

दुआ का अभिलाषी

धानू शेरपा

सैक्रेट्ररी जमाअत अहमदिया देवदमतांग (सिक्कम)

15 मील का सफर कर के पैदल जलसा में शामिल हुए हैं।

तो ये वे हैं लोग जो अल्लाह तआला ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम को प्रदान किए हैं। जो अल्लाह तआला और उस के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बातों को सुनते और फिर नफ्स की पवित्रता के सामान भी पैदा करते हैं। हर कुरबानी के लिए भी तैय्यार रहते हैं। वास्तव में यही वे लोग हैं जो बैअत का हक अदा करने वाले हैं। अगर इन अन्धों को अल्लाह तआला अक़्ल दे जो अक्ल के अन्धे हैं तो उन को नज़र आ जाना चाहिए कि इन का जो इख़लास तथा वफा और कुरबानियां हैं क्या यही हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के साथ अल्लाह तआला के समर्थन के स्पष्ट चिन्ह नहीं हैं।? अक्ल पर उन के पर्दे ने पड़े हों तो यही हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम के अल्लाह तआला की तरफ से भेजे जाने का स्पष्ट सबूत है जो पर्याप्त है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम जो आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शिक्षा को आगे बढ़ाने के लिए, दुनिया में फैलने के लिए आए, अगर इन मुसलमानों को यह अक्ल आ जाए काश कि उन्हें अक्ल आ जाए और यह सच्चाई को समझें तो अल्लाह तआला के फज़्ल से शीघ्र इस्लाम दुनिया में विजय पा सकता है। और मुसलमानों की वह जगहंसाई जो इस्लाम को बदनाम करने के लिए हो रही है और जिस तरह से इस्लाम को बदनाम किया जा रहा है, वह इस से बिल्कुल उलट हम देखेंगे। लेकिन, हमारा यह काम है कि ख़ुद का सुधार करें। अल्लाह तआला के आगे झुकें और अधिक से अधिक तब्लीग़ की तरफ भी ध्यान दें। कुरबानियों की तरफ ध्यान दें और दुनिया को इस्लाम की वास्तविकता को समझाएं।

अब मैं कुछ डेटा भी प्रस्तुत करता हूं। अल्लाह तआला की कृपा वक्फ जदीद के इकसठटें वर्ष के दौरान, जो 31 दिसंबर, 2018 को समाप्त हुआ था इस में जमाअत के लोगों को 913400 मिलियन पाउंड की कुरबानी पेश करने की तौफीक़ मिली। यह वसूली पिछले साल की तुलना में बढ़कर 2 लाख 71 हज़ार मिलियन अधिक है। पाकिस्तान अपनी स्थिति बनाए हुए है। इसके अलावा जो पोज़ीशन वाले दस देश हैं। उन में यू.के पहले स्थान पर है। तहरीक़ जदीद में जर्मनी था, तो अमीर साहिब ने कहा कि हम वक्फ जदीद में ऊपर आंएगे और यह बहुत अंतर के साथ आए हैं। अल्लाह तआला जमाअत के लोगों के मालों तथा नफ्सों में बरकत प्रदान करे। फिर जर्मनी दूसरे नंबर पर है। फिर अमेरिका है। फिर केनाडा है। मैं संयुक्त राज्य अमेरिका को भी बता देता हूं कि उनके बीच तथा कनाडा बीच बहुत कम अंतर है। यदि वे ज्यादा कोशिश नहीं करते थे, तो वे पहले नंबर से तीसरे नंबर पर आ गए थे, तो अब शायद और पीछे चले जाएं। फिर केनाडा चौथे स्थान पर है। फिर भारत है। फिर ऑस्ट्रेलिया है। फिर इंडोनेशिया है फिर मध्य पूर्व का एक जमाअत है। फिर घाना। फिर मध्य पूर्व की एक और जमाअत है।

और प्रति व्यक्ति अदायगी की दृष्टि से, अमेरिका पहले नंबर पर है। फिर स्विट्जरलैंड है। फिर ऑस्ट्रेलिया है।

अफ्रीका में समग्र अदयागी के मामला में घाना पहले नंबर पर है। मॉरीशस। फिर नाइजीरिया है फिर तंज़ानिया है फिर बुर्किना फासो और फिर बेनिन।

अल्लाह तआला की कृपा से इस वर्ष वक्फ जदीद 17 लाख 32 हज़ार लोग चन्दा वक्फ जदीद में शामिल हुए हैं। और इस शामिल लोगों में जो वृद्धि हुई है वह 1 लाख 23 हज़ार है। इस संख्या में वृद्धि में जो स्पष्ट रूप से काम किया है इस में नाइजर, सेरियलोन, नाइजीरिया, कैमरून, बेनिन, गाम्बिया, कांगो कंशासा, तंज़ानिया, लाइबेरिया और सेनेगल शामिल हैं।

वक्फ जदीद में चन्दा बालिग़ान और अत्फाल अलग अलग है। यह खासकर के पाकिस्तान और कनाडा में भी शुरु हुआ है। इस में बालिग़ों में पाकिस्तान की पहली तीन जमाअतें ये हैं। पहले नंबर पर लाहौर और दूसरे नम्बर पर रब्वा, फिर कराची और जो ज़िले हैं वे पहले नम्बर पर सियालकोट फिर इस्लामाबाद फिर फैसलाबाद फिर रावलपिंडी, फिर सरगोधा, गुजरांवाला, मुल्तान, हैदराबाद, मीरपुर ख़ास और डेरा गाज़ी ख़ान।

दफ्तर अत्फाल में पाकिस्तान की जो तीन प्रमुख जमाअतें हैं पहला लाहौर, दूसरा कराची तीसरा रब्वा है। और ज़िले की स्थिति के अनुसार पहले इस्लामाबाद, फिर सियालकोट, फिर रावलपिंडी, फिर सरगोधा, फिर गुजरांवाला फिर हैदराबाद, फिर डेरा गाज़ी खान, फिर शेख़ूपुरा, फिर उमर कोट और फिर ननकाना साहिब।

कुल वुसूली की दृष्टि से यू.के की दस बड़ी जमाअतें वॉर्सेस्टर पार्क (Worcester Park) नंबर एक हैं। फ़ज़ल मस्जिद,(Fazal Mosque) फिर बर्मिंघम दक्षिण (Birmingham South) फिर गिलिंगम(Gilingham) फिर बर्मिंघम पश्चिम, (Birmingham West) फिर इस्लामाबाद (Islamabad) (इस्लामाबाद) फिर हेस (Hayes)फिर ब्रैडफोर्ड उत्तर (Bradford North) और न्यू माल्डेन,(New Malden) और फिर ग्लासगो(Glasgow)

क्षेत्र के लिहाज़ से लंदन बी (London B) क्षेत्र पहले स्थान पर है। उसके बाद लंदन ए रीजन है। फिर मिडलैंड्स क्षेत्र है। फिर चौथा नॉर्थ ईस्ट रीजन है और पांचवां मिडलसेक्स क्षेत्र है।

दफ्तर अत्फाल की यहां ब्रिटेन की भी रिपोर्ट है। इसके अनुसार, ब्रैडफोर्ड साऊथ (Bradford South) नंबर एक पर है। हेड बटन (Surbiton)। फिर ग्लासगो (Glasgow) फिर रोहैम्पटन वेले (Roehampton Vale) फिर इस्लामाबाद (Islamabad) फिर रोहैम्पटन (Roehampton) फिर मिचम पार्क (Mitcham Park) फिर बैटरसी (Battersea) मुलेन मनोर (Malden Manor) और मस्जिद पश्चिम।

जर्मनी की पाँच स्थानीय इमारतों में नंबर एक पर हैम्बर्ग (Hamburg) है। दूसरे नंबर पर फ्रैंकफर्ट (Frankfurt) है। फिर विस्बदें (Wiesbaden) है। फिर मोरेलडेन-वाल्डोर्फ (Mrfelden-Walldorf) फिर डेटजनबैच (Dietzenbach) है।

वसूली की दृष्टि से अमरीका की पहली दस जमाअतें। सिलिकॉन वैली, फिर से सिटायल, डेट्रायट, सिल्वर स्प्रिंट, सेंट्रल वर्जीनिया, बोस्टन, डलास, लौरल (जॉर्जिया) कैरोलिना , यॉर्क।

और फिर वुसूली की दृष्टि से कैनाडा की इमारतें। वान, (Vaughan) नंबर दो कैलगरी (Calgary)फिर पीस वेलज (Peace Village) फिर ब्रैम्पटन। (Brampton) फिर वैंकूवर (Vancouver)

और जो दस बड़ी जमाअतें हैं। डरहम (Durham) विंडसर, (Windsor) ब्रैडफोर्ड (Bradford) एडमिन्टन वेस्ट, (Edmonton West) सिस्काटाऊन नॉर्थ (Saskatoon North) सिस्काटाऊन साऊथ, (Saskatoon South) मॉन्ट्रियल वेस्ट (Montreal West) मिल्टन वेस्ट, (Milton West) हैमिल्टन वेस्ट (Hamilton West) एबॉट्सफ़ोर्ड (Abbotsford)

दफ्तर अत्फाल के पांच प्रमुख स्थान हैं। डरहम (नंबर 1 पर, मिल्टन वेस्ट फिर ब्रैडफोर्ड, फिर हैमिल्टन साऊथ और सिास्काटाऊन।

वसूली की दृष्टि से भारत के प्रान्त केरल, जम्मू और कश्मीर, कर्नाटक, तेलंगाना, तमिलनाडु, ओडिशा, पश्चिम बंगाल, पंजाब, दिल्ली, उत्तर प्रदेश।

और जो वसूली से संबंधित बड़ी जमाअतें हैं वे हैं: हैदराबाद नं 1, नंबर 2 क़ादियान , पत्तापीरयम (Pathapiriyam) ।कालीकट, कोलकाता, कालीकट नंबर चार है और कोलकाता, बैंगलोर, चेन्नई, करोलाई, ऋषि नगर और दिल्ली।

ऑस्ट्रेलिया की वसूली के अनुसार दस जमाअतें हैं। कासिल हिल (Castle Hill) मेलबोर्न लॉन्ग (Melbourne Long Varren) वारेन, पेन्रीथ, (Penrith) मेलबर्न बेरविक, (Melbourne Berwick) मार्सडेन पार्क, (Marsden Park) ब्रिसबेन (Brisbane) एडिलेड साउथ (Adelaide South) ब्रिस्बेन लोगन, (Brisbane Logan) कैनबरा (Canberra) और प्लम्पटन (Plumpton)

अत्फाल में ऑस्ट्रेलिया की जमाअतें हैं पेन्रीथ (Penrith), एडिलेड साऊथ, ब्रिस्बेन लोगान, मेलबर्न लॉन्ग वारेन, मेलबोर्न बेरविक, ब्रिस्बेन साउथ, मार्सडेन पार्क, माउंट डरोटाईट, कासिल हिल, मेलबोर्न ईस्ट।

क्योंकि ये नाम उर्दू लिखें हैं, इसलिए हो सकता बोलने में ग़लती हो गई हो, लेकिन स्थानीय जमाअतों को इसकी जानकारी मिल चुकी होगी।

अल्लाह तआला सभी देशों के शामिल होने वालों के नफ़ूस तथा माल में बरकतें प्रदान करे और भविष्य में भी उच्च स्तर की कुरबानियां पेश करने की तौफीक़ प्रदान करे।

(मूल अल-फ़ज़ल इंटरनेशनल, 25/31 जनवरी, 2019 पृष्ठ 5-9)

☆ ☆ ☆
☆ ☆

पृष्ठ 2 का शेष

science

काशिफ अहमद साहिब जर्मनी MSc in power electronic

अदील बाबर साहिब जर्मनी M Eng. in Civil engineering

अब्दुल मुकीत गफ्फार साहिब जर्मनी MSc in business management

फ़राज़ अहमद साहिब जर्मनी MSc in mechatronic

मुसिव्वर अहमद साहिब जर्मनी master of law in international licensing law

अदील रहमान भट्टी साहिब जर्मनी MSc in management

अदनान ताहिर साहिब जर्मनी MA in international Islamic science

मुसिव्वर अहमद बाजवा साहिब जर्मनी MSc in information management

अज़मत अहमद साहिब जर्मनी MSc in business infomatics

साजिद सैफुल्लाह साहिब जर्मनी MSc in economics and finance

बिशारत अहमद साहिब जर्मनी MSc in economics and finance

गौहर करीम ज़ैरवी साहिब जर्मनी MSc in business administration

समर आज़म साहिब जर्मनी MSc in business sciences

सरमद मुहम्मद साहिब जर्मनी MSc in economic sciences

ख़लील अहमद साहिब जर्मनी MSc in business administration

नजीब अहमद साहिब जर्मनी MA in economic geography

बिलाल अहमद साहिब जर्मनी BSc in physics

कामरान अहमद खान जर्मनी BSc in orient sciences

चौधरी सजील अहमद साहिब जर्मनी BSc in computer science

ज़ीशान अहमद साहिब जर्मनी BSc in computer science

मुसिव्वर अहमद फारूकी साहिब जर्मनी BS in economic computer science

तलाल मुहम्मद दयान साहिब जर्मनी Bachelor of engineering in informations and electronics

सलीम मकबूल साहिब जर्मनी BA in teaching

ओसामा कमाल पाशा साहिब जर्मनी Bachelor of engineering in technical logistic management

राणा वलीद अहमद जनजूअ: साहिब जर्मनी BSc in physics

नवीद भट्टी साहिब जर्मनी BSc in economic computer science

फ़य्याज़ अहमद साहिब जर्मनी A-Levels (Abitur)

गुलाम कादिर अहमद बंदेशा साहिब जर्मनी A-Levels (Abitur)

सैयद वजाहत अहमद शाह साहिब जर्मनी A-Levels (Abitur)

Danang Crysnanto साहिब इंडोनिशेया Master of science in quantitative genetics and genome analysis

डॉक्टर रफी अहमद साहिबज़ादा साहिब घाना MBA in project planning and management

मुहम्मद शहज़ाद अनवर साहिब फिनलैंड MSc in computer sciences

फरहान हैदर साहिब जर्मनी MSc in economics and business

अनस अहमद साहिब बेनिन MA in english

यासिर महमूद साहिब फिनलैंड MSc in mathamatical logic

फहीम अहमद मसूद साहिब फ्रांस MSc in systems network & cloud computing

मलक फैज़ान अहमद साहिब ऑस्ट्रिया MSc in informations system

मूनस अहमद साहिब नाइजीरिया Bachelor of engineering in mechatronics engineering

मुहम्मद असदुल्लाह साहिब पाकिस्तान BSc in electrical engineering

बिशारत अहमद शाहिद साहिब लातविया Uzbek & Kyrgyz language and literature

रज़ा शरीफ रहमान साहिब जर्मनी Doctor medic in medicine in Romania

हसनैन मुजफ्फर साहिब नीदरलैंड Bachelor of engineering in information & communication

फराज़ जमील साहिब पाकिस्तान BS information technology

रिज़वानुल्लाह साहिब फिनलैंड BSc in industrial & manufacturing engineering

फिज़ा आमिर साहिबा नाइजर Masters in business and communication management

आमिर इरशाद साहिब मुरब्बी सिलसिला नाइजर ने उनका एवार्ड हासिल किया।

पुरस्कार वितरण समारोह के बाद 5 बज कर 5 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने अपने समापन संबोधन किया।

ख़िताब हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़

तशह्हुद तऊज़ तथा सूरत फातिहा की तिलावत के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने नीचे लिखी आयत की तिलावत फरमाई

يُرِيْدُوْنَ اَنْ يُّطْفِـُٔوْا نُوْرَ اللّٰهِ بِاَفْوَاهِهِمْ وَيَاْبَى اللّٰهُ اِلَّاۤ اَنْ يُّتِمَّ نُوْرَهٗ وَلَوْ كَرِهَ الْكٰفِرُوْنَ ○ هُوَ الَّذِيْۤ اَرْسَلَ رَسُوْلَهٗ بِالْهُدٰى وَدِيْنِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهٗ عَلَى الدِّيْنِ كُلِّهٖ ۙ وَلَوْ كَرِهَ الْمُشْرِكُوْنَ ○

फरमाया: इन आयतों का अनुवाद यह है कि वे चाहते हैं कि अल्लाह तआला के प्रकाश को अपने मूंहों से बुझा दें और अल्लाह हर दूसरी बात अस्वीकार करता है इस के कि अपनी रोशनी को पूरा कर दे, भले ही काफिर कैसा ही नापसंद करें। वही है जिस ने अपने रसूल को हिदायत देकर भेजा है ताकि वे सभी धर्मों पर प्रभुत्व प्राप्त कर सके। भले ही मुश्रिक कैसा ही नापन्द करें।

फरमाया यह आयतें जो सारे लोगों के लिए स्पष्ट और खुलकर घोषणा कर रही हैं कि इस्लाम ही वह धर्म है जिसने दुनिया में अपनी आदरणीय शिक्षा के साथ फैलना है। यह अल्लाह तआला की रोशनी है और अल्लाह तआला की रोशनी को मानव प्रयास बुझा नहीं सकते हैं। कुरआन वह पूर्ण शरीयत है जो दुनिया को हिदायत का सामान देती है और इसके अलावा कोई धर्म और कोई शरीयत नहीं जो दुनिया का मार्ग दर्शन और उद्धार प्रस्तुत कर सके और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ख़ातमुन्नबिय्यीन हैं और अब आपके बाद कोई शरीयत वाला नबी नहीं आ सकता है। हाँ अल्लाह तआला की इस घोषणा के अनुसार कि अब सभी धर्मों पर इस्लाम को विजयी होगी और नए युग में बाद में आने वाले दिनों में यह हिदायत के प्रकाशन की पूर्णता के लिए वह हिदायत जो हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर पूर्ण हुई आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सच्चे ग़ुलाम को आप की ग़ुलामी में अल्लाह तआला ज़िल्ली और गैर शरई नबी का दर्जा देकर मसीह मौऊद और महदी मौऊद के नाम से भेजेगा। अत: अल्लाह तआला के इस वादे और घोषणा को पूरा करने के लिए उसने हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद कादियानी अलैहिस्सलाम को मसीह मौऊद और महदी मौऊद बनाकर भेजा जिन्होंने इस्लाम की सुन्दर शिक्षा को दुनिया के सामने पेश किया और दुनिया के एक कोने से दूसरे कोने तक इस्लाम के संदेश को पुहंचाया। आप के ज़माने में भी इस्लाम का संदेश यूरोप में भी आ गया अमेरिका तक चला गया और वह जमाअत जो आप ने स्थापित की। जो इस काम को ख़िलाफत की प्रणाली के अधीन जारी रखे हुए है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम इन आयतों के हवाले में एक जगह इस्लाम के विरोधियों का जवाब देते हुए फरमाते हैं कि ये लोग अपने मुंह की बकवास से बकते हैं कि इस धर्म को कभी सफलता नहीं होगी यह धर्म हमारे हाथ से नष्ट हो जाएगा परन्तु ख़ुदा कभी भी इस धर्म को नष्ट नहीं करेगा और नहीं छोड़ेगे जब तक कि इसे पूर्ण न कर ले। आप फरमाते हैं कि अब कुरआन शरीफ मौजूद है। हाफिज़ जो बैठे हैं कई हुफ्फाज़ दुनिया में बैठे है देख लीजिए कि काफिरों ने किस दावे के साथ अपनी राय प्रकट कीं कि यह धर्म ज़रूर विलुप्त हो जाएगा तथा हम इसे समाप्त कर देंगे और इस के मुकाबला पर भविष्यवाणी की गई है कि कुरआन शरीफ में ऐसा कुछ भी नहीं है जो नष्ट हो जाएगा। फरमाया कि यह एक बड़े पेड़ की तरह हो जाएगा और इस में बादशाह होंगे। तो यह उस समय जब कि कमज़ोरी की स्थिति थी। अल्लाह तआला का यह वादा पूरा हुआ और इस्लाम फैला और कोई प्रयास इसे हटा नहीं सकता तो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इस्लाम के विरोधियों को कहा कि आज भी तुम इसे समाप्त नहीं कर सकते यह खुली चुनौती है। आपने दुनिया को बताया कि इस्लाम के पुन: पुनरोद्धार के लिए अल्लाह तआला ने मुझे आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि की ग़ुलामी में भेजा है और मैं अल्लाह तआला की आज्ञा से और मदद से सारी दुनिया में इस्लाम की उच्च शिक्षा को पहुंचाऊंगा और फरमाया कि मैं तेरी तब्लीग़ को ज़मीन के किनारों तक पहुंचाऊंगा। फिर आप अलैहिस्सलाम

ने यह भी कहा कि मेरे द्वारा अल्लाह तआला ने जो जमाअत की स्थापित की है वह अब इस्लाम के झंडे को लेकर दुनिया के हर कोने में जाएगी और इस सुन्दर शिक्षा के माध्यम से दिल जीतेगी न कि किसी तलवार और बंदूक से और नेक प्रकृति लोगों को अल्लाह तआला हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के झण्डे के नीचे लाएगा।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : अपने सभी मुसलमानों को भी कहा कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि के संदेश को सुनो और समझो और आने वाले मसीह मौऊद और महदी मौऊद के साथ जुड़कर अपने ईमान और यकीन में तरक्की करो और फिर देखो अल्लाह तआला के सभी वादे भी आपके साथ कैसे पूरे होते हैं। अल्लाह तआला तम्हें एक नई शान प्रदान करेगा लेकिन तथाकथित उलमा की बातों में आकर मुसलमानों का बहुमत इस ओर ध्यान नहीं दे रहा बल्कि उलमा की कोशिश यह है कि अल्लाह तआला के भेजे हुए फरस्तादे और आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि सच्चे ग़ुलाम के काम में रोकें डालें और इसे खत्म लेकिन, अल्लाह तआला की कृपा से, यह सिलसिला प्रत्येक विरोध के बाद आगे से आगे बढ़ रहा है, और जैसा कि मैंने कहा, अल्लाह तआला नेक लोगों को इस्लाम और वास्तविक इस्लाम में ला रहा है।

आप अलैहिस्सलाम ने फरमाया कि "अल्लाह तआला ने इल्हाम के माध्यम से बताया उस समय मैंने ब्राहीने अहमदिया में भी लिखा था कि जबकि मेरे वहम तथा गुमान में भी नहीं था कि अल्लाह तआला मुझे मसीह मौऊद और महदी मौऊद के स्थान पर खड़ा करेगा। आप फरमाते हैं देखो कि यह कितनी महान भविष्यवाणी है कि शुरुआत से अधिकांश उलमा कहते हैं कि मसीह मौऊद के पक्ष में हैं। ये जो आयतें तिलावत की गई हैं यह मसीह मौऊद अलैहिस्सालम की भविष्यवाणी के हक़ में भी है और उस के समय में पूरी हो गई। अर्थात मसीह मौऊद के समय में पूरी हो गई कि सभी धर्मों पर इस्लाम को उसके माध्यम से विजय प्राप्त होगी। अर्थात मसीह मौऊद के ज़माना में ही पूरी होगी कि सभी धर्मों पर इस्लाम को विजय प्राप्त होगी। आप ने फरमायी कि सत्रह सालों से यह वर्णन है और मसीह मौऊद के दावा के करने से बहुत पहले दर्ज है। ताकि ख़ुदा लोगों को शर्मिन्दा करे कि जो इस विनीत के दावा को इन्सान का झूठ ख़्याल करते हैं। फरमाते हैं कि बराहीने अहमदिया ख़ुद गवाही देती है कि इस समय इस विनीत के बारे में मसीह मौऊद का विचार भी नहीं था और पुरानी आस्था पर नज़र थी लेकिन ख़ुदा के इल्हाम ने उस समय गवाही दी कि तू मसीह मौऊद है। क्योंकि जो कुछ नबीं के चिन्हों ने मसीह के बारे में फरमाया था अल्लाह तआला के इल्हाम ने इस विनीत पर जमा दिया। अप ने फरमाया अत: अल्लाह तआला ने मुझे मसीह मौऊद के रूप में भेजा है। और अब जो अल्लाह तआला का नूर जो आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि की गुलामी मुझे मिला है न इन मौलवियों की फूंकों से न इस्लाम विरोधी शक्तियों की फूंकों से बुझाया जा सकता है।

आपने एक स्थान पर फरमाया कि मुंह की फूंकें क्या होती हैं यही किसी ने ठग कह दिया या किसी ने दुकान दार काफिर बे नास्तिक कह दिया ग़रज़ ये लोग ऐसी बातों से चाहते हैं कि अल्लाह तआला के प्रकाश को बुझा दें लेकिन वे सफल नहीं हो सकते फरमाया अल्लाह के नूर को बुझाते बुझाते ख़ुद ही अपमानित हो जाएंगे।

अत: सभी विरोधियों के बावजूद जो अपनों तथा ग़ैरों अर्थात मुसलमान उलमा और उन के अन्तर्गत मुसलमान हुकूमतों और लोगों की तरफ से हुईं और हो रही हैं और इस तरह ग़ैर धर्म वालों की तरफ से भी या ग़ैर ताकतों की तरफ से भी। अल्लाह तआला हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम के द्वारा अपने नूर को फैलाता चला जा रहा है। लाखों लोग प्रत्येक साल इन सारे उलमा के झूठों तथा कोशिशों के हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम की जमाअत में शामिल हो रहे हैं। और उन का शामिल होना और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम को मानने के लिए अल्लाह तआला की तरफ से मार्ग दर्शन और ईमान पर मज़बूती से स्थापित रहने के लिए इस तरह की घटनों हैं कि प्रत्येक सुनने वाले के ईमान में वृद्धि होती है। अल्लाह तआला के वादों पर विश्वास बढ़ता चला जाता है। केवल इस वर्ष की कुछ घटनाएं में वर्णन करता हूं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: घाना से हमारे एक मुबल्लिग़ बिलाल साहिब लिखते हैं कि एपरएसट क्षेत्र के एक गांव ज़ोगा में हमारे तीन स्थानीय मुअल्लिम तब्लीग़ के लिए गए और जिस घर में उनके आवास की व्यवस्था हुई वहाँ एक ग़ैर मुस्लिम उम्र वाली औरत आऊनी अडज़ूले रहती है वह मुअल्लमीन के आने से बहुत ख़ुश हुई। उस महिला ने बताया कि मैंने तीन साल पहले सपना देखा था कि धार्मिक ज्ञान सिखाने के लिए आए तीन पुरुष मेरे घर आए हैं और मैं उन्हें पानी पिलाती हूं, और मुअल्लिम गांव के बच्चों को इकट्ठा करते हैं और उन्हें नमाज़ पढ़ाते हैं। अत: ये सभी घटनाएं कहती हैं उसी तरह हुईं जैसा कि मैंने सात साल पहले सपने में देखा था। इन मुअल्लिमों ने उसी तरह गांव के बच्चों को इकट्ठा किया और उन्हें इस्लामिक शिक्षाएं दीं, नमाज़ों की इमामत करवाई। ये सब कुछ देख कर इस गांव से इस महिला और उसके परिवार सहित 92 व्यक्तियों ने अहमदियत स्वीकार करने की सआदत हासिल की थी और यहां अल्लाह तआला की कृपा से एक जमाअत की स्थापना हो गई थोड़े समय में। अब क्या यह किसी आदमी का काम है कि एक महिला जो सात साल पहले अफ्रीका के दूरदराज़ के इलाके में मुस्लिम नहीं है, एक सपना दिखाती है, और सात साल बाद वह सपना इसी तरह पूरा होता है। और फिर अल्लाह तआला इस गांव के 92 लोगों के दिल में डालता है कि तुम्हारे ऊपर जो ख़ुदा का फज़्ल है उसे स्वीकार करो और वे स्वीकार कर लेते हैं।

फिर बेनिन के क्षेत्र लुका सा के मुअल्लिम देसी साहिब कहते हैं कि हम एक गांव में तब्लीग़ के लिए गए तो वहाँ कुछ मुसलमानों ने हमें गालियां देनी शुरू कर दें और नऊज़ो बिल्लाह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के बारे में भी ग़लत शब्दों का प्रयोग करते रहे। जैसा कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम ने फरमाया कि, "लोग यही कहते हैं गालियां देते हैं, दुकानदार है अविश्वासी है, काफिर है। बहरहाल ये लोग तरह से गालियां देते हैं, इसलिए हम वहां से वापस आए और गांव से निकल कर रास्ते में नमाज़ अदा की और दुआ की कि हे ख़ुदा आज हम तेरे मसीह का संदेश पुहंचाने के लिए आए हैं हमें असफल न लौटाना। अत: जब हम नमाज़ अदा कर के ख़ड़े हुए तो हमने देखा कि एक व्यक्ति हमारे लिए इंतज़ार कर रहा है, जब हमने अपना परिचय कराया तो उसने कहा साथ ही मेरे गांव है क्या आप मेरे गांव चल सकते हैं। हम उस व्यक्ति के गांव पहुंचे तो उसने गांव के काफी लोगों को इकट्ठा कर लिया जिन्हें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का संदेश पहुंचाया गया इस तब्लीग़ के परिणाम में इस दिन यह कहते हैं मुअल्लिम साहिब कि 65 लोग बैअत कर के जमाअत में शामिल हुए और इस तरह इस गांव में अहमदिया का पौधा लग गया। अब जैसा की हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम ने फरमाया : कि ये गालियां ही देते हैं, लेकिन क्या इन गालियों से अल्लाह तआला का नूर समाप्त हो सकता है। कभी नहीं। एक जगह से गालियां पड़ी तो दूसरी जगह जाना। इन लोगों के वहम तथा गुमान में भी नहीं था कि वहाँ एक व्यक्ति ख़ुद आ जाता है या अल्लाह तआला उसे भेजता है कि आप लोगों की प्रकृति नेक है जाओ मेरे मसीह का सन्देश पहुंचाने वाले आए हुए हैं उन्हें अपने गांव में लाओ और इस संदेश को स्वीकार करो और इसे सुनो और स्वीकार करो।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ फरमाया: फिर एक उदाहरण है कि अल्लाह तआला कैसे तब्लीग़ करने वालों की निराशा के बाद थोड़े ही समय में उनकी प्रार्थनाओं को स्वीकार करते हुए फल अता फरमाता है। तो एक घटना बताते हुए बुर्किना फासो के क्षेत्र बोबो के मुअल्लिम लिखते हैं कि हमने एक गांव में एक गांव का तब्लीग़ की, लेकिन इसका कोई परिणाम नहीं निकला। मैंने जाते हुए कुछ लोगों को कहा कि आप जब शहर आएं तो मेरे घर ज़रूर आना, तो कुछ दिनों के बाद उनमें से एक आदमी हसन हमारे घर आए तो मैंने उसे एम, टी, ऐ लगा दिया और थोड़ी ही देर बाद जब एम.टी.ए पर मेरा ख़ुत्बा या कोई कार्यक्रम आ रहा था मुझे इसमें देखा तो कहने लगा इस व्यक्ति को तो मैं पहले सपने में देखा है तो वह उसी समय बिना किसी तर्क के अहमदियत में प्रवेश कर गया और वापस अपने गांव जाकर ग्रामीणों को कहा और पर्याप्त गांव लोगों ने इस पर अहमदियत स्वीकार की और ख़ुदा की कृपा से वहां एक मजबूत जमाअत स्थापित हो चुकी है।

फिर मुबल्लिग़ सिलसिला लाइबेरिया आसिफ साहिब कहते हैं कि कीथ माउंट काउंटी के एक गांव नामबो में अहमदियत के स्थापना की कई बार कोशिश की गई लेकिन वहाँ के मौलवियों के विरोध की वजह से यह प्रयास सफल नहीं हो सका, हर बार जब जाते थे मौलवी जैसी उनकी आदत थी टोला बन कर गालियां देते। कुछ समय पहले कहते हैं इस गांव के एक व्यक्ति मुहम्मद अल्फ़रीद सानी से मुलाकात हुई यह सरकारी टीचर हैं और दमिश्क से शिक्षा प्राप्त कर के आए हैं और गांव में अपने परिवार के साथ रहते हैं। उन्हें जमाअत अहमदिया के बारे में विस्तार से सूचित किया गया, और जमाअत के निज़ाम और मान्यताओं के बारे में बताया गया। महोदय ने जमाअत के कार्यक्रम समारोहों और जलसा सालाना में भाग लिया

अल्लाह तआला ने उनके दिल को अहमदियत की तरफ झुकाया उन्होंने अपने गांव में ख़ुद ही अहमदियत का संदेश पहुंचाया और तब्लीग़ शुरू कर दी। ख़ुदा तआला ने उन के प्रयासों में बरकत दी और जिस के नतीजा में वहां 50 लोगों ने बैअत कर ली और यहां भी नई जमाअत स्थापित हुई को। आमतौर पर अरब देशों से पढ़कर आते हैं लोग उन्हें अपनी अरबी भाषा और ज्ञान पर बहुत गर्व होता है कि धर्म का ज्ञान हम सीख कर आए हैं और बहुत कम ऐसे हैं जिन्हें अल्लाह तआला ने सईद प्रकृति बनाया है और जो बात सुनते भी हैं लेकिन उन की भी कोई अदा अल्लाह तआला को पसन्द आई तो अल्लाह तआला ने उन के लिए मार्ग दर्शन फरमाया।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ फरमाया: केवल अफ्रीका के रहने वालों का मार्ग दर्शन नहीं हो रहा बल्कि यूरोप में रहने वालों की भी अल्लाह तआला मार्गदर्शन करता है। अत: बोस्निया के मुबल्लिग़ एक दोस्त अलवेदन साहिब की बैअत की घटना का लिखते हैं कि अलवेदन साहिब जमाअत के साथ संपर्क से पहले पश्चिमी तर्ज पर स्वतंत्र जीवन गुज़ार रहे थे लेकिन उन्हें कुछ सपनों की वजह से अल्लाह तआला से ऐसे संकेत मिले कि उन्होंने धीरे धीरे प्रयास से उन बुराइयों से ख़ुद को दूर रखना शुरू कर दिया। इस समय यह कुछ ख़तरनाक शारीरिक रोगों में भी पीड़ित हो गए और दोस्तों में उपहास का शिकार बन गए बहरहाल इन पर एसा समय भी आया कि क़रीब था कि मानसिक रोगी बन जाते, बहरहाल उन्होंने लगातार नमाज़ अदा करनी शुरू कर दी, पहले वे मुसलमान थे और दुआओं में लग गए। एक दिन सज्दे को दौरान उन्होंने सुना जैसे कि फरिश्ता शैतान से कह रहा है कि बस कर अब इसको छोड़ दे। इस पर शैतान की तरफ से कहा जाता है कि अभी तक एक और परीक्षण बाकी है। यह कहते हैं कि इस प्रकार का आध्यात्मिक अनुभव उनके लिए आश्चर्यचकित करने वाले था। इसके बाद उन पर एक परीक्षण आया लेकिन साथ ही उन्हें विश्वास हो गया कि अल्लाह तआला उनके हिदायत के सामान पैदा कर रहा है क्योंकि सपने में देखा था कि एक परीक्षण है उन्होंने समझ लिया कि बस यह आख़री परीक्षण है इसलिए इस घटना के कुछ समय बाद ही उन्हें जमाअत के बारे में संदेश मिला, उन्होंने अपने आध्यात्मिक अनुभव को याद किया और कुछ तब्लीग़ मीटिंग के बाद, बैअत कर के जमाअत में शामिल हो गए ।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ फ़रमाया फिर हम देखते हैं कि गैर अहमदी उलमा की अहमदियों को उनके ईमान से हटाने की कोशिश कितनी होती है और उसके बाद कैसे वह दृढ़ रहते हैं। बेनिन का एक गांव इगलो है, वहां के एक अहमदी हैं लादेले हसन साहिब। कहतो हैं कि मैं अपने परिवार के 25 लोगों के साथ अहमदियत में शामिल हुआ। अहमदी होने के बाद ग़ैर अहमदी मौलवियों के एक प्रतिनिधिमंडल जो सऊदी अरब से शिक्षा प्राप्त कर के आया था हमारे पास आया और कहा कि अहमदी काफिर हैं और वे आप को गुमराह कर रहे हैं। हम मूल इस्लाम सऊदी अरब से सीख कर आए हैं इसलिए आप अहमदियों की बातों में न आएं तो कहते हैं मैंने उनसे मूल इस्लाम के बारे में कुछ सवाल किए कि एक मुसलमान कैसे नमाज़ पढ़ता है और अहमदियों और ग़ैर अहमदियों के कुरआन में क्या अंतर है आदि। इस पर मैंने अहमदियों का इस्लाम भी वही है लेकिन एक बात यह समझ में आ रही है कि जब अहमदियों ने तब्लीग़ की थी तो किसी समुदाय या धर्म को बुरा नहीं कहा था लेकिन आप लोगों का अंदाज़ ही बता रहा है कि आप झूठ बोल रहे हैं इस लिए आप यहां से यहाँ से चले जाएं। अब कुछ लोग यह भी अहमदियों पर आरोप लगाते हैं कि जी आप भी तो हमारे मौलवियों को बुरा कहते हैं इसलिए हम कह देते हैं, हालांकि कभी हम ने इस तरह नहीं कहा हाँ जो लोग गालियां देते हैं उन्हें यही कहा जाता है कि अगर तुम हमें काफिर कहते है, तो यही कुफ्र तुम्हारे पर आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की परिभाषा के अनुसार तुम पर पड़ता है। इसके बाद कहते हैं लगभग तीन साल तक मौलवी प्रतिनिधियों के रूप में आकर हमें गुमराह करने की कोशिश करते रहे लेकिन अल्लाह तआला ने हमारे ईमानों को बर्बाद नहीं किया और हम अपने घर के एक छोटे कमरे को नमाज़ और जुम्अ: के लिए विशेष कर लिया और फिर इस के बाद अन्य लोगों को भी अहमदियत में शामिल होने की तौफीक़ मिली और आज उन्हें अल्लाह तआला की कृपा से मस्जिद के निर्माण की सहायता भी मिल गई है।

(शेष.....)

☆ ☆ ☆

पृष्ठ 1 का शेष

अपना रंग दिखाता है।

कथनी और करनी में समानता

अल्लाह का भय इस में है कि इंसान देखें कि उसके कथन और कर्म कहां तक एक दूसरे से समानता रखते हैं। फिर जब देखें कि उसका कथन और कर्म बराबर नहीं तो समझ ले कि अल्लाह तआला का गज़ब भड़केगा। जो दिल नापाक है चाहे कितना ही कथन पवित्र हो खुदा तआला के निकट कोई मूल्य नहीं पाता बल्कि खुदा का क्रोध भड़काता है। अत: मेरी जमाअत समझ ले कि वे मेरे पास आए हैं इसलिए कि बीज बोया जाए जिस से फलदार वृक्ष हो जाए अपने अंदर ध्यान दें कि उसका अंदरूना कैसा है? उसकी भीतरी अवस्था कैसी है? अगर हमारी जमाअत भी अल्लाह तआला ने करे ऐसी है कि उसकी ज़ुबान पर कुछ है और दिल में कुछ तो फिर अंजाम अच्छा ना होगा। अल्लाह तआला जब देखता है कि एक जमाअत जो दिल से ख़ाली है और ज़बानी दावे करती है वह ग़नी है, वह किसी की परवाह नहीं करता। बदर की विजय की भविष्यवाणी चुकी थी परन्तु फिर भी हज़रत मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम रो-रो कर दुआ मांगते थे। हज़रत अबू बकर रज़ि अल्लाह तआला अन्हो ने निवेदन किया कि जब हर तरह से विजय का वादा है, तो फिर रोने की क्या आवश्यकता है? आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि कि अल्लाह तआला के वादा में को ई छुपी हुई शर्त मौजूद हो।

(मल्फूज़ात जिल्द 1 पृष्ठ 2 से 3)

☆ ☆ ☆

☆ ☆

ख़ुदा तआला के समक्ष अपनी श्रद्धा और वफादारी दिखाओ। कुरआन शरीफ की सहीह इच्छा को मालूम करो और उस पर अनुकरण करो

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम की अपनी जमाअत से आशा

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम फरमाते हैं कि

"याद रखो हमारी जमाअत इसलिए नहीं है कि जिस तरह साधारण दुनियादार जीवन व्यतीत करते हैं। केवल ज़बान से कह दिया कि हम इस सिलसिले में शामिल हो गए हैं। और अनुकरण की ज़रूरत न समझी। जैसे बदकिस्मत मुसलमानों की अवस्था है। कि पूछो तुम मुसलमान हो? तो कहते हैं कि अल्हम्दो लिल्लाह मगर नमाज़ नहीं पढ़ते और अल्लाह के शिआर का सम्मान नहीं करते। अत: मैं तुम से यह नहीं चाहता कि केवल जीभ से स्वीकार करो और अनुकरण से कुछ न दिखाओ। यह निकम्मी अवस्था है। ख़ुदा तआला इस को पसन्द नहीं करता। और दुनिया की इस अवस्था ने मांग की है कि ख़ुदा तआला ने मुझे सुधार के लिए खड़ा किया है। अत: अगर कोई मेरे साथ सम्बन्ध रख कर भी अपनी अवस्था में सुधार नहीं करता और व्यावहारिक ताकतों को तरक्की नहीं देता बल्कि ज़बान से स्वीकार कर लेने को ही काफी समझता है वे मानो अपने कर्म से मेरे न आने की ज़रूरत को वर्णन करता है। फिर अगर तुम अपने कर्म से प्रमाणित करना चाहते हो कि मेरा आना व्यर्थ है तो फिर मेरे साथ सम्बन्ध रखने के क्या अर्थ हैं? मेरे साथ सम्बन्ध रखते हो तो मेरे उद्देश्यों तथा लक्ष्यों को पूरा करो और वे यही हैं कि ख़ुदा तआला के समक्ष अपनी श्रद्धा और वफादारी दिखाओ और कुरआन शरीफ की शिक्षा पर अनुकरण करो जिस तरह रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने कर के दिखाया और सहाबा ने किया। कुरआन शरीफ की सहीह इच्छा को मालूम करो और उस पर अनुकरण करो। ख़ुदा तआला के समक्ष इतनी ही बात काफी नहीं हो सकती कि ज़बान से स्वीकार कर लिया और अनुकरण में कोई रोशनी तथा सरगर्मी न पाई जाए। याद रखो कि वह जमाअत जो ख़ुदा तआला स्थापित करना चाहता है वे अनुकरण के बिना जीवित नहीं रह सकती।

(नज़ारत इस्लाह तथा इर्शाद मर्कज़िया कादियान)

☆ ☆ ☆

☆ ☆

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553

The Weekly **BADAR** *Qadian*

Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA

POSTAL REG. No.GDP 45/ 2017-2019 Vol. 3 Thursday 14 February 2019 Issue No. 7

MANAGER :
NAWAB AHMAD
Tel. : +91- 1872-224757
Mobile : +91-94170-20616
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 500/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और मानव जाति से हमदर्दी

मानव जाति की हमदर्दी के सन्दर्भ में विशेषत: अपने भाइयों की हमदर्दी और मदद पर नसीहत करते हुए एक अवसर पर हज़रत अक़दस मसीहे मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़र्माया कि -

''मेरी तो यह हालत है कि अगर किसी को दर्द होता हो और मैं नमाज़ में लगा हूँ मेरे कान में उसकी आवाज़ पहुँच जावे तो मैं यह चाहता हूँ कि नमाज़ तोड़कर भी अगर उसको फ़ायदा पहुँचा सकता हूँ तो फ़ायदा पहुँचाऊँ और जहाँ तक सम्भव हो सके उससे हमदर्दी करूँ। यह अख़्लाक़ के विरुद्ध है कि किसी भाई की मुसीबत और तकलीफ़ में उसका साथ न दिया जावे। अगर तुम कुछ भी उसके लिए नहीं कर सकते तो कम से कम दुआ ही करो। अपने तो दर् किनार, मैं तो यह कहता हूँ कि ग़ैरों और हिन्दुओं के साथ भी ऐसे सदाचार का नमूना दिखाओ और उनसे हमदर्दी करो। बेपरवाही की आदत हरगिज़ नहीं होनी चाहिए।

एक बार मैं सैर के लिए बाहर जा रहा था, अब्दुल करीम नामक एक पटवारी मेरे साथ थे वह कुछ आगे थे और मैं पीछे। रास्ते में 70 या 75 वर्ष की एक वृद्धा मिली। उसने एक पत्र उसे पढ़ने को कहा परन्तु उस ने उसे झिड़कियाँ देकर हटा दिया। मेरे दिल पर चोट सी लगी। उसने वह पत्र मुझे दिया। मैं उसको लेकर रुक गया और उसको पढ़कर अच्छी तरह समझा दिया। इस पर उसे बहुत शर्मिन्दा होना पड़ा। क्योंकि ठहरना तो पड़ा और पुण्य से भी वंचित रहा।'' (मल्फ़ूज़ात भाग 4, पृ. 82-83 नवीन संस्करण)

फ़र्माते हैं -''उसके बन्दों पर रहम करो और उन पर ज़ुबान या हाथ या किसी तद्बीर से ज़ुल्म न करो और सृष्टि की भलाई के लिए कोशिश करते रहो और किसी पर अहंकार न करो चाहे अपना अधीनस्थ हो और किसी को गाली मत दो ख़्वाह वह गाली देता हो। विनम्र, दयालु और नेक नीयत और सृष्टि के हमदर्द बन जाओ ताकि स्वीकार किए जाओ... बड़े होकर छोटों पर रहम करो न कि उनका अपमान और आलिम (ज्ञानी) होकर नादानों (अज्ञानों) को नसीहत करो, न खुदनुमाई से उनका अपमान। और अमीर होकर ग़रीबों की सेवा करो, न खुदपसन्दी से उन पर अहंकार। हलाकत की राहों से डरो।''

(कश्ती -ए-नूह, रूहानी ख़ज़ायन भाग 19, पृ. 11-12)

फिर फ़र्माया -''लोग तुम्हें दु:ख देंगे और हर तरह से तकलीफ़ पहुँचाएँगे मगर हमारी जमाअत के लोग जोश न दिखाएँ। क्रोध में आकर दिल दुखाने वाले शब्दों का प्रयोग न करो, अल्लाह तआला को ऐसे लोग पसन्द नहीं होते। हमारी जमाअत को अल्लाह तआला एक नमूना बनाना चाहता है।''

आप फ़र्माते हैं ''अल्लाह तआला संयमी को प्यार करता है। ख़ुदा तआला की बड़ाई को याद करके सब भयभीत रहो और याद रखो कि सब अल्लाह के बन्दे हैं। किसी पर अत्याचार न करो न ही क्रोध करो न किसी को नीच (गिरा हुआ) समझो। जमाअत में यदि एक आदमी गन्दा होता है तो वह सबको गन्दा कर देता है यदि तुम्हारी आदत में क्रोध की तरफ़ झुकाव हो तो फिर अपने दिल को टटोलो कि यह क्रोध किस स्रोत से निकला है, यह मक़ाम बहुत नाज़ुक है।'' (मल्फ़ूज़ात भाग 1 पृ. 8-9)

फ़र्माया -''ऐसे बनो कि तुम्हारी सच्चाई और वफादारी और गिड़गिड़ाहट आसमान तक पहुँच जावे। ख़ुदा तआला ऐसे व्यक्ति की सुरक्षा करता और उस को बरकत देता है जिसको देखता है कि उसका दिल सत्यता और मुहब्बत से भरा हुआ है। वह दिलों पर नज़र डालता है और झांकता है न कि ज़ाहिरी बातों को पसन्द करता है। जिसका दिल हर प्रकार के गन्द और नापाकी से ''मुअर्रा'' और ''मुबर्रा'' (अर्थात पवित्र) पाता है, उसमें आ उतरता है और अपना घर बनाता है।''

(मल्फ़ूज़ात भाग 3, पृ. 181, नवीन संस्करण)

फ़रमाया -''मैं फिर कहता हूँ कि जो लोग परोपकारी हैं, और ईमान, सत्यता और वफ़ा में परिपूर्ण हैं वह अवश्य बचा लिए जाएँगे। इसलिए तुम अपने अन्दर ये खूबियाँ पैदा करो।''

(मल्फ़ूज़ात भाग 4, पृ. 184, नवीन संस्करण)

फ़र्माया -''अतएव तुम ख़ुदा के पास क़ुबूल (स्वीकार्य) नहीं हो सकते जब तक अन्दर और बाहर में एकरूपता न हो। बड़े होकर छोटों पर दया करो न कि उनका अपमान और ज्ञानी होकर अज्ञानियों को नसीहत करो न खुदनुमाई से उनका अपमान। धनवान् होकर निर्धनों की सेवा करो न खुदपसन्दी से उन पर अहंकार। विनाश के मार्गों से डरो, खुदा से डरते रहो और तक़्वा इख़्तियार करो... क्या ही बद्क़िस्मत है वह व्यक्ति जो इन बातों को नहीं मानता जो ख़ुदा के मुख से निकली औंर मैंने वर्णन किया। यदि तुम चाहते हो कि आकाश पर ख़ुदा तुमसे प्रसन्न हो तो तुम आपस में ऐसे एक हो जाओ जैसे एक पेट में से दो भाई। तुम में से अधिक महान वही है जो अपने भाई के दोषों और भूलों को अधिक से अधिक क्षमा करता है। और बद्बख़्त है वह जो हठधर्मी करता है और क्षमा नहीं करता।''

(कश्ती नूह रूहानी ख़ज़ायन भाग 19, पृ. 12-13)

फ़र्माया -''दरअसल ख़ुदा तआला की सृष्टि के साथ हमदर्दी करना बहुत ही बड़ी बात है और ख़ुदा तआला इस को बहुत पसन्द करता है। इससे बढ़ कर और क्या हो होगा कि वह उससे अपनी हमदर्दी ज़ाहिर करता है। आमतौर पर दुनिया में भी ऐसा ही होता है कि यदि किसी व्यक्ति का सेवक उसके किसी मित्र के पास जावे और वह उसका हाल भी न पूछे तो क्या वह मालिक, जिसका वह सेवक है अपने उस मित्र से प्रसन्न होगा ? कभी नहीं। हालाँकि उसको तो कोई कष्ट उसने नहीं पहुँचाया, मगर नहीं। उस सेवक की सेवा और उसके साथ सद्व्यवहार मानो मालिक के साथ सद्-व्यवहार है। ख़ुदा तआला को भी इसी तरह इस बात से चिढ़ है कि कोई उसकी सृष्टि से हमदर्दी में कोताही करे क्योंकि उसको अपनी सृष्टि बहुत प्यारी है। अत: जो व्यक्ति ख़ुदा तआला की सृष्टि के साथ हमदर्दी करता है वह मानो अपने ख़ुदा को प्रसन्न करता है।''

(मल्फ़ूज़ात भाग 4, पृ. 215-216, नवीन संस्करण)

अल्लाह तआला हमें हज़रत मसीहे मौऊद अलैहिस्सलाम की इन नसीहतों पर अमल करने की शक्ति दे, और आप से जो बैअत का प्रण हमने किया है उसको पूरा करने की शक्ति प्रदान करे।

(ख़ुत्बा जुमा 12 सितम्बर 2003 ई. मस्जिद फ़ज़्ल लन्दन, ब्रिटेन)

☆ ☆ ☆
☆ ☆

अख़बार बदर के पर्चों की हिफाज़त करें।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम के ज़माना की यादगार अख़बार बदर 1952 ई से कादियान दारुल अमान से प्रकाशित हो रहा है। 2016 ई से इस के प्रादेशिक भाषाओं में संस्करण निकल रहे हैं। जो जमाअत के लोगों की दीनी ज़रूरतों को पूरा कर रहा है। इस में कुरआन मजीद का आयतें, आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हदीसें, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम की लेखनी के अतिरिक्त हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के ताज़ा जुम्अ: के ख़ुत्बे तथा ख़िताब, हुज़ूर अनवर के दौरों की ईमान वर्धक दीनी तथा दुनियावी ज्ञान से भरपूर रिपोर्टें प्रकाशित होती हैं। इन का अध्ययन करना, इन को दूसरों तक पहुंचाना, उन पर अध्ययन करना, और इस के माध्यम से अपने बच्चों की शिक्षा दीक्षा करना हम सब पर फर्ज़ है। इन सारे उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए अख़बार बदर को हिफाज़त के साथ अपने पास रखना ज़रूरी है।

धार्मिक शिक्षा दीक्षा पर आधारित यह अख़बार मांग करता है कि इस का सम्मान किया जाए अत: इस को रद्दी में बेचना इस को सम्मान को नष्ट करना है। अगर इस को संभालना संभव न हो तो सावधानी के साथ इस को नष्ट कर दें ताकि इन पवित्र लेखनी का अपमान न हो। आशा है कि जमाअत के लोग इस तरफ विशेष ध्यान देंगे और इस से भरपूर लाभ उठाते हुए इन बातों को ध्यान में रखेंगे।

(सम्पादक)

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad